फरवरी 2004
Rs. 10 /-
चन्दामामा

**NOW AVAILABLE**
**AT ALL LEADING STORES**

## GAMES AND ACTIVITY CD-ROM
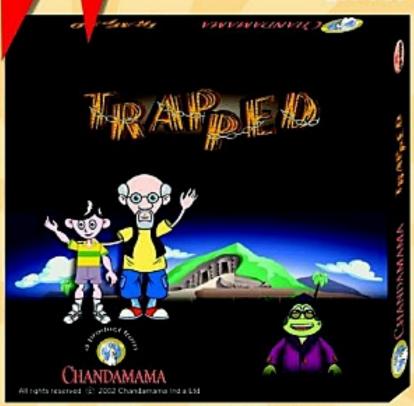
PROF. PURENOTHIN, THE RENOWNED INDOLOGIST, IS TRAPPED INSIDE THE MOUND OF MURUKKI. YOU JOIN DETECTIVE MANDOO TO SEARCH FOR THE PROFESSOR AND SAVE HIM. THE ONLY WAY TO THE MOUND OF MURUKKI IS REVEALED TO YOU. ONLY WHEN YOU CAN GET HOLD OF FOUR KEYS HIDDEN ALONG YOUR ROUTE. AND YOU HAVE TO SEARCH FOR THEM THROUGH A DOZEN DIFFERENT GAMES AND ACTIVITIES. GO FOR CLUES AND KEYS!

MIND YOU, YOU HAVE ONLY 60 MINUTES TO REACH THE PROFESSOR! GET THERE FAST, BUT BEWARE OF YOURSELF BEING TRAPPED!

*Hey, but this one is a whole lot of fun! You have a different set of games and activities, every time you begin your search.*

A quality product from **Chandamama**

For more details, please contact :
**Chandamama India Limited,**
82, Defence Officers' Colony,
Ekkatuthangal, Chennai - 600 097.
www.chandamama.org

**RS. 199/- ONLY**

चन्दामामा

सम्पुट - १०८ फरवरी २००४ सञ्चिका - २

## विशेष आकर्षण

भल्लूक मांत्रिक १३
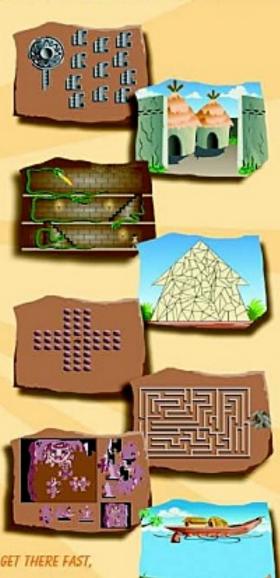
अनंत की आकांक्षा १९

विष्णु पुराण ४५

जब परियाँ बाज़ार करने आईं ५१

## अंतरंग

✲ जब वे तरुण थे ...७ ✲ सत्यवान का चमत्कार ...८ ✲ समाचार झलक ...२५ ✲ तीसरा वरदान ...२६ ✲ अठारह की पहेली ...३० ✲ विदूषक का धर्मसंकट ...३४ ✲ सफल यात्रा ...४१ ✲ विष्णु पुराण-२ ...४५ ✲ मुश्किल सवाल - अच्छा जवाब ...५५ ✲ अमर फल ...५८ ✲ आर्य ...६०
✲ आप के पन्ने ...६४
✲ चित्र शीर्षक स्पर्धा ...६६

**SUBSCRIPTION**

For USA and Canada
Single copy $2
Annual subscription $20

*Remittances in favour of Chandmama India Ltd.*

to

Subscription Division
CHANDAMAMA INDIA LIMITED
No. 82, Defence Officers Colony
Ekkatuthangal, Chennai - 600 097
E-mail :
subscription@chandamama.org

**शुल्क**

सभी देशों में एयर मेल द्वारा बारह अंक ९०० रुपये
भारत में बुक पोस्ट द्वारा १२० रुपये अपनी रकम डिमांड ड्राफ्ट या मनी-ऑर्डर द्वारा 'चंदामामा इंडिया लिमिटेड' के नाम भेजें।

संस्थापक
बी. नागिरेड्डी और चक्रपाणि

# धरती के संरक्षण के लिए

नये बर्ष की रंगरलियाँ अभी पूरी तरह खत्म भी नहीं हुई थीं, कि मलेशिया को एक प्रचण्ड भूकम्प ने झकझोर दिया । इस प्राकृतिक प्रकोप में जान-माल की संभावित हानि के समाचार की प्रतीक्षा की जा रही है । सप्ताह भर पहले ईरान ने भी एक भीषण भूकम्प को झेला जिसके फलस्वरूप प्राचीन नगर बाम में पचास हजार व्यक्तियों की जानें चली गईं ।

भूकम्प को प्रायः एक प्राकृतिक आपदा माना जाता है । हमें सचाई का सामना करना होगा । हम-मनुष्यों की, भूकम्प का कारण बननेवाली, चाहे बह तत्काल भले न हो, परिस्थितियों की सृष्टि करने में प्रच्छन्न भूमिका रहती है ।

चर्म हमारी देह का एक महत्वपूर्ण अंग है और इसके विशिष्ट कार्य हैं । इसमें छिद्र होते हैं जो साँस लेने में मदद करते हैं और शरीर के ताप को बनाये रखते हैं । जब ये छिद्र बन्द हो जाते हैं तब उद्‌भेदन के परिणाम-स्वरूप फोड़े-फुंसियाँ निकलने लगती हैं ।

उसी प्रकार धरती की सतह अत्यधिक शहरीकरण से प्रभावित होती है, जिससे पर्यावरण का सन्तुलन बिगड़ जाता है । धरती का केन्द्र तब सामंजस्य स्थापित करने के लिए कुछ संचलन करता है जो उग्र हो सकते हैं और जिनके परिणाम स्वरूप भूकम्प और ज्वालामुखी के बिस्फोट हो जाते हैं ।

मनुष्य का लोभ पानी और तेल पाने के उद्देश्य से पृथ्वी को खोदने और उसमें छिद्र करने के लिए उसे बाध्य करता है । बह धरती के बाहर और अन्दर बिस्फोट करता है । बातावरण दूषित हो जाता है; नदियों में कूड़ा-कचरा डालने से उसका सहज प्रवाह रुक जाता है । हम इस प्रकार प्रकृति के साथ दुर्व्यहार करते हैं जो हमसे बदला लेती है, कभी-कभी बिना चेताबनी के!

इस प्रकार प्राकृतिक प्रकोपों के कारण की खोज करने से पता चलता है कि भोगविलास और आराम के प्रति मनुष्य का लालच ही इसके लिए जिम्मेदार है । समय आ गया है जब हमें धरती के संरक्षण और पर्याबरण के रखरखाब के लिए हर सम्भव प्रयत्न आरम्भ कर देना चाहिये ।

सम्पादक : *बिश्वम*

जब वे तरुण थे .....

# भीड़ से अलग – जोसेफ मैज़िनी

रास्ते पर भिखारी को देख कर तुम क्या करते हो? अपनी जेब से कुछ सिक्के निकालते हो और उसकी झोली में डाल देते हो! यही न! लेकिन क्या इससे अधिक कुछ कर पाते हो? क्या करुणा या सहानुभूति दिखाते हो? अच्छ तो छः वर्षीय एक बालक की यह कहानी पढ़ो, जिसकी एक भिखारी के प्रति प्रतिक्रिया साधारण लोगों से भिन्न थी ।

वह बालक इटली की एक गली में अपनी माँ के साथ घूमने के लिए निकला । अचानक उन्हें रास्ते पर चिथड़ों में लिपटा एक भिखारी मिला । बालक ने पहले कभी ऐसा दृश्य नहीं देखा था । उसे धक्का लगा और वह हक्का-बक्का सा हो गया । वह भिखारी के पास गया और उसके गले में अपनी बाहें डाल कर अपनी आयु से कहीं अधिक, करुणा भरी दृष्टि से उसे देखने लगा और उसके कानों में सहज भाव से उसने सान्त्वना के कुछ शब्द बुदबुदाये । तब अपनी माँ के पास आकर उसने उसे कुछ देने की प्रार्थना की ।

तुम अच्छी तरह से माँ और भिखारी दोनों की प्रतिक्रिया समझ सकते हो! वे अवाक् रह गये । भिखारी की आँखों में आँसू छलछला आये । उसने बालक की माँ से कहा, "तुम्हारा बेटा साधारण बालक नहीं है । वह हमारे देश और देशवासियों के लिए महान कार्य करेगा । इसकी देखभाल अच्छी तरह से करना मैम!"

भिखारी के वचन अक्षरशः सच निकले । बालक बड़ा होकर एक करुणामय व्यक्ति निकला । उसने अपने गरीब देशवासियों के दुख-दर्द को दूर करने का भरसक प्रयास किया ।

वह एक प्रबल देशभक्त था । वह प्रायः कहा करता था कि यदि मेरे हृदय को चीरा जाये तो वहाँ 'इटली' शब्द अंकित मिलेगा! अन्ततः उसने अपना सारा जीवन अपने देश की सेवा में समर्पित कर दिया । वह प्रसिद्ध इटलीवासी जोसेफ मैजिनी था ।
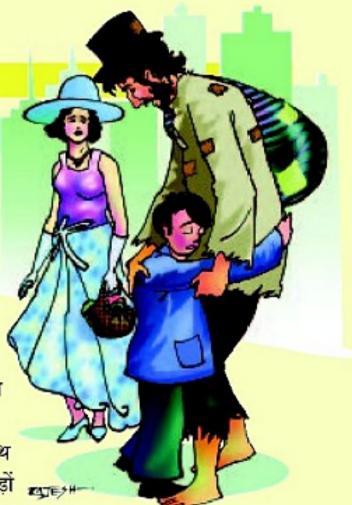
# सत्यवान का चमत्कार

**भा**ग्यपुरी में सत्यवान नामक महापंडित रहा करता था। चमत्कारपूर्ण बातें करने में वह दक्ष था। उसके इस कौशल की प्रशंसा करते हुए लोग थकते नहीं थे। सकल शास्त्रों में वह पारंगत था, फिर भी वह बड़ा ही विनम्र था। सच कहा जाए तो किसी भी विषय में उसकी बराबरी का कोई था नहीं। ग्रामीण उसका बड़ा आदर करते थे।

कीर्तिकामी नामक एक विद्वान उस गाँव में बस जाने के लिए नया-नया आया था। उसे इस बात पर गर्व था कि कोई ऐसी विद्या नहीं, जिसे वह नहीं जानता हो। अपनी प्रशंसा सुनना उसे बहुत प्रिय था। इसके लिए वह धन खर्च करने के लिए भी तैयार रहता था।

शहर में कोई उसकी बात सुनने के लिए तैयार नहीं था, इसलिए वह गाँव में बसने आ गया। वहीं उसने भवन बना लिया और सौ एकड़ की उपजाऊ भूमि भी खरीद ली।

कीर्तिकामी के स्वभाव के बारे में कुछ स्वार्थियों ने सुन रखा था। अब वे उसी के इर्द-गिर्द घूमने लगे। हर पल उसकी प्रशंसा के पुल बाँधने लगे, उसे सातवें आसमान में बिठाने लगे और उससे धन ऐंठने लगे। यह उनका पेशा-सा हो गया।

इस वजह से भाग्यपुरी गाँव कीर्तिकारी को बहुत अच्छा लगा। यों वह आनंदमय वातावरण में समय आराम से गुज़ारने लगा।

कीर्तिकामी की पत्नी सुवर्णा शहर में पैदा हुई और बड़ी हुई थी। उसे यह गाँव बिलकुल ही अच्छा नहीं लगा। प्रशंसा पाने के लिए उसका पति पानी की तरह धन बहा रहा था, जो उसे बिलकुल पसंद नहीं आया। वह इसको लेकर परेशान भी होने लगी। इसलिए उसने शहर में रह रहे अपने भाई शुभाकर को गाँव में बुला लिया।

शुभाकर ने गाँव में आते ही वहाँ की परिस्थिति

- भाग्यश्री पोद्वाल -

को भली-भांति भांप लिया। वह नहीं चाहता था कि उससे उम्र में बड़े बहनोई और उसके बीच कोई बखेड़ा खड़ा हो। इसलिए उसने यही उत्तम समझा कि उसे धीरे-धीरे समझाया जाए। तत्संबंधी उपायों पर उसने खूब सोचा-विचारा। आख़िर उसने फ़ैसला कर लिया कि प्रशंसाओं के द्वारा ही उनपर विजय पायी जाए।

एक दिन उसने अपने बहनोई से कहा, ''किसी भी देश के लिए गाँव ही रीढ़ की हड्डी के समान है। गाँव में ही बस जाने के आपके निर्णय की प्रशंसा किये बिना नहीं रह सकता। किन्तु आप कृषि में नहीं, व्यापार में दक्ष हैं, इसलिए मेरी समझ में अच्छा यही है कि आप शहर लौटें, व्यापार करें और लाखों रुपये कमायें। यही मेरी बिनती भी है। आपके आशय की पूर्ति के लिए मैं भाग्यपुरी में ही रह जाऊँगा और खेती संभालूँगा।''

कीर्तिकामी ने उसकी बात मानने से साफ़-साफ़ इनकार कर दिया। उसने शुभाकर से कहा, ''यहाँ मुझे अपार गौरव मिल रहा है। चाहे धन कितना भी कमा लिया जाए, शहर में ऐसा आदर नहीं मिलता। मुझे यही जगह अच्छी लगती है।''

शुभाकर को पहले से ही मालूम था कि बहनोई यही उत्तर देंगे। उनके उत्तर से निराश हुए बिना उसने शांत स्वर में कहा, ''बहनोई जी, गाँवों में लोग धन को महत्व नहीं देते। वे प्रतिकार को ही महत्व देते हैं। बिना धन लिए वे निस्वार्थ भाव से कवियों, पंडितों तथा अन्य कलाकारों को चाहते हैं और उनका आदर करते हैं। ऐसा आदर सत्यवान को इस गाँव में भारी मात्रा में मिल रहा है। आपके प्रशंसक आपसे धन ऐंठने के लिए ही आपकी तारीफ़ के पुल बाँध रहे हैं।'' यों उसने स्थिति स्पष्ट कर दी।

उसकी इन बातों से कीर्तिकामी में रोष उभर आया, उसका पौरुष जाग उठा। अब तक उसके मन में सत्यवान के प्रति आदर की भावना थी। जैसे ही अपने साले की बातों से उसे मालूम हो गया कि आदर के विषय में सत्यवान उसका प्रतिद्वंद्वी है तो वह ईर्ष्या के मारे जल उठा और बोला, ''पैसा ही परमात्मा है। उससे कोई भी काम संभव है। उस सत्यवान के मुँह से ही यह कहलवाकर रहूँगा कि इस संसार में मेरे जैसा
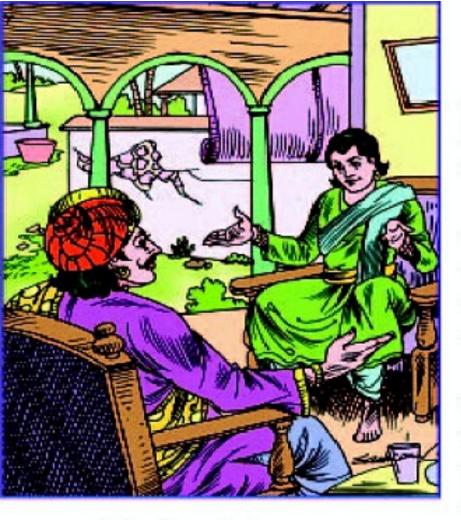
कोई है नहीं। तुम देखते जाना, क्या-क्या करता हूँ।''

फिर दूसरे दिन उसने सत्यवान को संदेश भेजा। ''मैं आपका सत्कार धन से करना चाहता हूँ।'' सत्यवान ने पूछा, ''सम्मान किसलिए?''

कीर्तिकामी ने सोचा तक नहीं था कि ऐसा उत्तर सत्यवान से मिलेगा, इसलिए वह बौखला पड़ा, ''यह आदमी कौन है, जो सत्कार कराने से इनकार कर रहा है। वह या तो अहंकारी होगा या बहुत बड़ा मूर्ख। गाँव के लोग बिना समझे-बूझे उसे गौरव दे रहे हैं और खुद अपना मूल्य कम कर रहे हैं। यह सत्य प्रकट करूँगा और अपनी प्रतिष्ठा को अत्यधिक बढ़ाऊँगा।'' उसने शुभाकर से कहा।

कीर्तिकामी उसी दिन सत्यवान के घर गया। सत्यवान ने घर आये मेहमान का स्वागत आदरपूर्वक किया और उनके आने का कारण जानना चाहा।

''प्रतिभा को मुकुट पहनाने के लिए यह कोई ज़रूरी नहीं है कि प्रतिभा ही हो। आपका सम्मान करने की मेरी तीव्र इच्छा है। आप इनकार मत कीजिए।'' यों कहते हुए कीर्तिकामी ने अपने आगमन का कारण बताया।

''आपका आशय प्रशंसनीय है। पर, मुझमें जो प्रतिभा है, वह केवल पांडित्य में ही है। पंडित ही मेरा सम्मान करेंगे तो मुझे संतृप्ति होगी। कृपया बताइये कि मेरे पांडित्य के कौन-से अंश आपको अच्छे लगे?'' सत्यवान ने पूछा।

कीर्तिकामी को इन बातों ने चोट पहुँचायी, पर उसे प्रकट किये बिना उसने कहा, ''आर्य, कारण जानने के लिए आप इतना आग्रह करते हैं तो मेरी श्रेष्ठता के बारे में आप लोगों से कहिए। यह परंपरा सदियों से चली आ रही है कि कवि और पंडित उनका आदर सम्मान करनेवालों की प्रशंसा करते रहने से थकते नहीं।''

''हो सकता है, मैं सम्मान में आपकी बराबरी का नहीं हूँ। परंतु किस पक्ष को लेकर आपकी प्रशंसा करूँ?'' सत्यवान ने पूछा।

''प्रशंसा करने मात्र के लिए आप इतनी माथापच्ची क्यों कर रहे हैं? शहर में मैं एक सफल व्यापारी रहा। अपनी आमदनी को भी त्यजकर गाँव में बसने आ गया हूँ। यही मेरा बड़प्पन है, मेरी महानता है।'' कीर्तिकामी ने कहा।

"मेरा मानना है कि प्रशंसा पाने के लिए ही यहाँ आनेवालों से गाँव को कोई लाभ नहीं होता। एक दूसरे की प्रशंसा करते रहने की यह सोच ग़लत है।" यों सत्यवान ने स्पष्ट कह दिया और उसे वहाँ से भेज दिया।

कीर्तिकामी आग-बबूला हो उठा। तब से उसने सत्यवान के विरुद्ध दुष्प्रचार करना शुरू कर दिया। धन के लालच में आकर कुछ ग्रामीण कहने लगे कि सत्यवान अहंकारी है। उसने कीर्तिकामी का अपमान किया है आदि आदि। कुछ लोगों ने उनकी बातों का विश्वास किया तो कुछ लोगों ने नहीं किया। सत्यवान ने इस प्रचार पर ध्यान नहीं दिया।

एक सप्ताह के बाद, सत्यवान तालाब में नहाते समय सीढ़ियों पर फिसलकर गिर गया और लगभग दस दिनों तक घर में खाट पर ही पड़ा रहा।

कीर्तिकामी इस मौके का फ़ायदा उठाते हुए कहने लगा, "जो भी काम करता हूँ, अच्छा काम ही करता हूँ, इसीलिए मुझपर भगवान की कृपा है। मेरे साथ जिसने दुर्व्यहार किया, भगवान ने उसे दंड दिया।" यों कहते हुए अपने अनुचरों के द्वारा प्रचार को और तीव्र किया।

इस पर सत्यवान को दुख हुआ। वह ग्रामाधिकारी से मिलकर बोला, "कीर्तिकामी ने मुझे अहंकारी ठहराते हुए मेरे विरुद्ध दुष्प्रचार किया, पर मैंने उसपर कोई ध्यान नहीं दिया, क्योंकि अपनी-अपनी राय बनाने का पूरा हक़ सभी को है। परंतु मैं नहीं जानता कि जो

आकस्मिक दुर्घटना हुई है, तद्द्वारा भगवान ने मुझे दंड दिया। मैं आपसे बिनती करता हूँ कि आप सुनवाई करें कि मुझसे क्या ग़लती हो गयी।''

ग्रामाधिकारी ने तुरंत इसपर सुनवाई शुरू कर दी। ग्राम देवी के मंदिर के सामने यह सुनवाई शुरू हुई। ग्रामीणों का विश्वास था कि पुजारी के मुँह से ग्राम देवी कहलवाती है कि कौन-सा गवाह सच और कौन-सा गवाह झूठ बोल रहा है। इस कारण से कोई भी यह बताने आगे नहीं आया कि सत्यवान ने कीर्तिकामी का अपमान किया।

कीर्तिकामी ने अपनी सफाई देते हुए कहा, ''मेरे साथ जिसने दुर्व्यवहार किया, उसे हानि पहुँचकर ही रहेगी। मेरा विश्वास है कि सत्यवान दुर्व्यवहार के कारण ही सीढ़ियों पर फिसलकर गिरा है।'' यों उसने बचने की कोशिश की।

उसकी खोखली दलीलों से ग्रामाधिकारी को यह जानने में देर नहीं लगी कि कीर्तिकामी झूठ बोल रहा है। उसने कीर्तिकामी से कहा, ''यह जानने के लिए कि आपकी बातों में कितनी सच्चाई है, हमें ग्राम देवी की सहायता लेनी पड़ेगी।''

तब सत्यवान ने दखल देते हुए तुरंत कहा, ''मैं विश्वास करता हूँ कि कीर्तिकामी की बातों में सच्चाई है। अपनी प्रशंसा करने के लिए मुझपर उन्होंने दबाव डाला पर मैंने ऐसा करने से इनकार कर दिया। यही मेरी ग़लती हो सकती है और भगवान ने इसीलिए मुझे सज़ा दी होगी। इसलिए ग्राम देवी से अभ्यर्थना करने की क्या आवश्यकता है?''

उसकी इन बातों पर ग्रामाधिकारी सहित सब लोग हँस पड़े। कीर्तिकामी अपमान के भार से दब गया। उसके साले ने उसे चेतावनी भी दे रखी थी कि प्रतिभावानों से टकराओ मत, पर उसने जान-बूझकर यह ग़लती कर दी। उसे पश्चाताप हुआ। उसने कृषि का काम शुभाकर को सौंप दिया और शहर चला गया।

फिर इसके बाद कीर्तिकामी एक बार भी उस गाँव में नहीं आया। फिर भी भाग्यपुरी के निवासी सत्यवान की चमत्कार भरी बातों के बारे में अक़्सर जो कथाएँ सुनाते रहते हैं, उन कथाओं में उसने शाश्वत स्थान प्राप्त कर लिया।
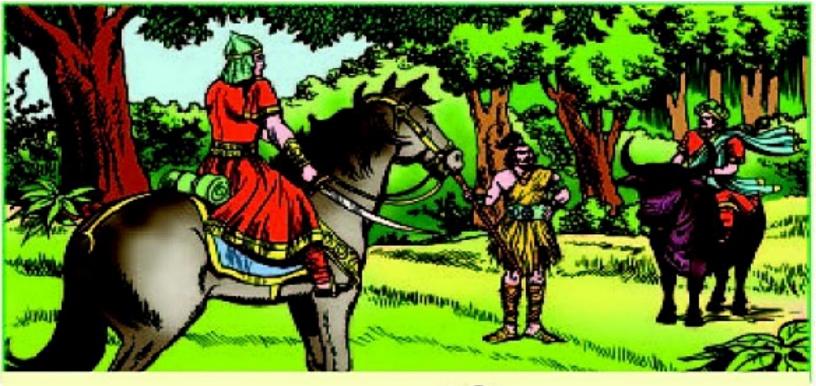
# भल्लूक मांत्रिक

## 4

*(जल प्रपात के पीछे से प्रवेश करनेवाले भल्लूक मांत्रिक ने कालीवर्मा के साहस की प्रशंसा की। उसी वक्त राजा जितकेतु का मंत्री पहुँचा। मांत्रिक ने उसे डराया और बधिक के भैंसे पर सवार कराकर सब को राजधानी की ओर बढ़ने का आदेश दिया। कालीवर्मा ने मांत्रिक से नाराज़ हो तलवार खींची। इसके बाद...)*

भल्लूक मांत्रिक पल भर के लिए कालीबर्मा की बातें सुनकर स्तब्ध रह गया । मंत्री जीवगुप्त को छोड़ बाक़ी सभी लोग सहमे हुए थे। जीवगुप्त भैंसे को हाँककर कालीबर्मा के निकट जाने को हुआ। इस पर भल्लूक मांत्रिक ने उसे रोकते हुए कड़क कर पूछा, ''अजी मंत्री महोदय ! बताओ, अब तुम्हारी क्या योजना है? क्या कालीवर्मा को मेरे विरुद्ध उकसाना चाहते हो?''

यह सवाल सुनकर जीवगुप्त सन्न रह गया। फिर संभलकर शांत स्वर में बोला, ''महाशय ! आप मुझे गलत समझ रहे हैं ! मैं इस युवक को समझाने जा रहा था कि आप जैसे महामांत्रिक का आदेश-पालन हमेशा हितकर होता है।''

इस पर भल्लूक मांत्रिक मुस्कुराते हुए बोला, ''तुम जिस युवक की बात करते हो, वही तुम सबको आदेश देने जा रहा है। सावधान रहो।'' फिर तलवार खींचकर अपनी ओर क्रुद्ध दृष्टि से देखनेवाले कालीवर्मा से बोला, ''कालीवर्मा !
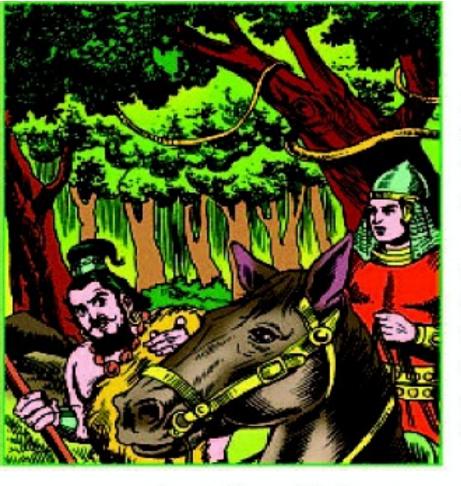
जल्दबाजी मत करो। तुम ज़िंदगी का ज़्यादा अनुभव नहीं रखते। क्या तुमने यह भी सोचा है कि इस हालत में हम दोनों अपने अपने रास्ते चल देंगे तो क्या होनेवाला है?''

''इस संबंध में मुझे सोचने की कोई ज़रूरत महसूस नहीं होती ! तुम फिर से जल प्रपात के पीछेवाली गुफा के अन्दर चले जाओगे और मैं अपने गाँव पहुँचकर खेती करते अपनी ज़िंदगी मजे से बिताऊँगा।'' कालीवर्मा ने उत्तर दिया।

''ओह ! तुम जितने हिम्मतवर हो, उतने भोले भी हो !''

ये शब्द कहकर भल्लूक मांत्रिक ने जीवगुप्त से पूछा, ''अजी मंत्री महोदय, साफ़-साफ़ बतला दो कि कालीवर्मा को बन्दी बनाने के लिए कितने सैनिकों को भेजने की राजा को सलाह देनेवाले हो? मैं तुम्हारे दिल की बात ताड़ सकता हूँ। अगर तुम झूठ बोलोगे तो मैंने जैसे इस ठूँठ को भस्म कर दिया है, वैसे ही तुम्हें भी भस्म कर दूँगा।'' ये शब्द कहते मांत्रिक ने अपना मंत्र दण्ड ऊपर उठाया।

जीवगुप्त थर-थर काँपते हुए बोला, ''आपने मेरे विचारों को भांप लिया है। मैं महाराजा जितकेतु का नमक खाता हूँ, इसलिए उनका हित चाहते हुए कालीवर्मा का वध कराने की सलाह देना मेरे लिए आवश्यक ही है न? एक मंत्री की हैसियत से यह मेरा कर्तव्य भी हो जाता है।''

इस पर भल्लूक मांत्रिक ने जोर से अपने मंत्र दण्ड को जमीन पर दे मारा, तब कहा, ''कालीवर्मा, सुनते हो न? अब चन्द्रशिला नगर के इस राज्य में तुम्हारी कोई सुरक्षा नहीं है।''

अब जाकर कालीवर्मा को अपना हाल मालूम हुआ। ''भारी सेना रखनेवाले जितकेतु राजा का अकेले अथवा मुट्ठी भर साथियों की मदद से सामना करना नामुमकिन है। अब उसके सामने दो ही रास्ते हैं - राजा जितकेतु की गद्दी पर अधिकार करना या यह संभव न हुआ तो उस देश को छोड़कर भाग जाना...।''

कालीवर्मा यों विचार करके तलवार को म्यान में रखकर भल्लूक मांत्रिक से बोला, ''गुरु, आपका कहना सच है ! मेरे अपने हित के संबंध में मुझसे ज़्यादा मुझे पाल-पोसकर बड़ा करनेवाले बलभद्र नामक नौकर और आप ही ज़्यादा जानते हैं। अब मुझे कैसा आदेश दे रहे हैं?''

भल्लूक मांत्रिक कालीवर्मा के कंधे से अपने मंत्र-दण्ड का स्पर्श कर बोला, ''कालीवर्मा ! तुम्हारी भाग्यदेवी ने ही तुम्हें प्रोत्साहित कर मुझे गुरु के रूप में संबोधित करने की प्रेरणा दी है। शाबाश ! मैं तुम्हें आदेश नहीं दूँगा; सलाह दूँगा। इस वक़्त हम सब राजधानी जा रहे हैं। हमें देखना है कि राजा जितकेतु का दर्प कैसा है?''

फिर मंत्री से बोला, ''अजी मंत्री महोदय, मैं अब भैंसे पर सवार होने जा रहा हूँ। तुम आगे-आगे चलकर उसकी नाक में कसे रस्से पकड़कर मार्ग दिखाओ।''

मंत्री जीवगुप्त चुपचाप भैंसे पर से उतर पड़ा और उसके रस्से पकड़ लिये।

भल्लूक मांत्रिक ने अपने मंत्र दण्ड को भैंसे के सर पर टिकाकर कहा, ''हे मेरे किंकर ! क्षुद्र मानव के हाथ पड़कर अपनी जन्मजात अपूर्व शक्तियों को खोने की चिंता करते हो? ऐसी कोई बात नहीं ! सुनो, पृथ्वी पर से एक दो गज की ऊँचाई तक हवा में उड़कर नगर की दिशा में थोड़ी दूर तक यात्रा करो।''

इसके दूसरे ही क्षण भैंसे ने अपने नासापुटों से आंधी की तरह साँस बाहर छोड़ दी, सर उठाकर घनघोर गर्जन किया, तब हवा में उड़कर नगर की ओर चल पड़ा। उस वक़्त भैंसे के रस्सों को छोड़ मंत्री जीवगुप्त गिरते-पड़ते उसके पीछे दौड़ पड़ा।

थोड़ी दूर जाने के बाद भल्लूक मांत्रिक ने भैंसे को जमीन पर उतारा । मंत्री ने ज्यों ही उसके रस्से पकड़ लिये, तब पीछे चलनेवालों की ओर देख मांत्रिक बोला, ''देखते हो न? महामंत्री की कैसी दुर्गति हो गई है? मैं राजा जितकेतु को भी इसी प्रकार की सजा देने जा रहा हूँ।''
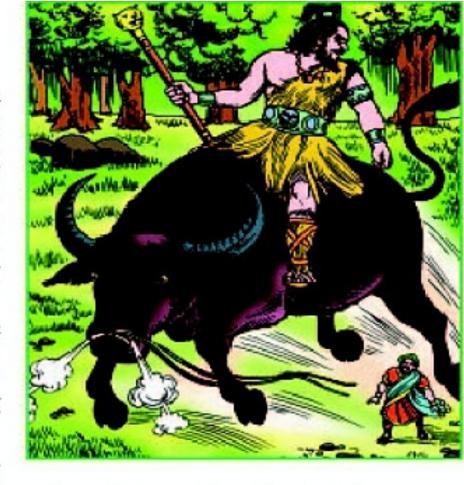
इस दृश्य को संन्यासी कालीवर्मा मांत्रिक के समीप जाकर बोला, ''मैं आपको अपना गुरु मानता हूँ। पर यह मत समझिये कि मेरी इच्छा के विरुद्ध दिये जानेवाले आदेशों का भी मैं पालन करूँगा। क्या सचमुच आप दुष्ट जितकेतु को दण्ड देने जा रहे हैं?''

''गुरु-शिष्य बनने के बाद गुरु ऐसे ही आदेश देंगे जिनसे शिष्य का हित हो। हाँ, यह बताओ, क्या तुम राजा जितकेतु की गद्दी पाना चाहते हो?'' भल्लूक मांत्रिक ने कालीवर्मा के चेहरे को परखते हुए पूछा।

''मैं ऐसा कोई प्रलोभन नहीं रखता। मैं बस,
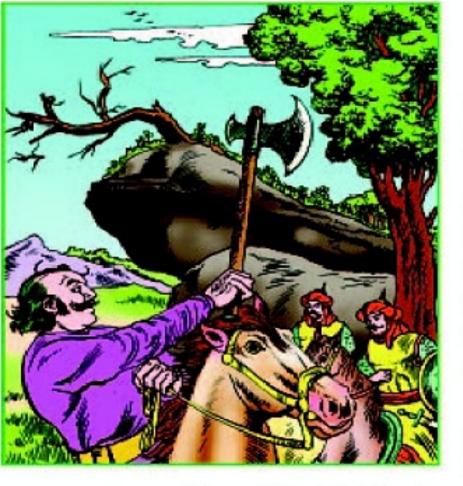
यही चाहता हूँ कि राजा निर्दोष लोगों को शिरच्छेद देने का दण्ड देना बंद कर दे।''

''मैं कोशिश करके देखता हूँ कालीवर्मा, जो लोग जन्म से ही गद्दी के वारिस बन जाते हैं, वैसे लोगों में शीघ्र मानसिक परिवर्तन नहीं होता। क्यों मंत्री? मैं ठीक कहता हूँ न?'' भल्लूक मांत्रिक ने पूछा।

''महामांत्रिक! आप ने खूब कहा!'' जीवगुप्त ने मांत्रिक के कथन का समर्थन किया।

इसके बाद सबने मिलकर नगर की ओर थोड़ी दूर तक यात्रा की। तब दो अश्वारोही तेजी के साथ उनके सामने आये और उन्हें रोकते हुए बोले, 'रेशमी वस्त्र और सुवर्ण कुंडल धारण करनेवाले संन्यासी को भैंसे पर सवार कराकर आगे चलवाते कैसे जा रहे हैं? काले वस्त्र में पिशाच जैसे दीखनेवाले को पंच कल्याणी जैसे घोड़े पर सवार कराते हैं? तुम लोग आख़िर कौन हो?''

कालीवर्मा उत्तर देने जा रहा था, तभी भल्लूक मांत्रिक जोर से हँस पड़ा और बोला, ''तुमलोग राजा जितकेतु के सैनिक नहीं हो, इसीलिए हमको पहचान नहीं पाये। हम यह बात खुद भूल गये हैं कि हम वास्तव में कौन हैं? यही बात जानने के लिए हम दूर दिखाई देनेवाले उस नगर में जा रहे हैं।''

''परिहास की ये बातें रहने दो। हम उदयगिरि के राजा दुर्मुख के सैनिक हैं। हम अभी सिरस वन में जाकर लौट रहे हैं। वहाँ पर हमें कालीवर्मा दिखाई नहीं दिया। उसकी लाश भी नहीं मिली। राजा जितकेतु ने अपना वचन भंग किया। इसीलिए हमारे राजा सेना सहित उन पर आक्रमण करनेवाले हैं।'' राजा दुर्मुख के सैनिकों ने कहा।

''ये सारी बातें हमें सुनाने की क्या आवश्यकता है? तुमलोग अपने रास्ते जा सकते हो!'' भल्लूक मांत्रिक ने क्रोध में कहा।

इतने में दुर्मुख के आश्विकों में से एक ने बधिक की ओर विस्मय के साथ देखकर ठठाकर हँसते हुए मज़ाक भरे स्वर में कहा, ''हाँ, भाई! तुम्हें तो मैं बिलकुल पहचान नहीं पाया। तुम सिरस वन में रहनेवाले बधिक हो न?''

बधिक दांत भींचते हुए परशु उठाकर बोला, ''अबे घमण्डी! क्या यह जानते हुए भी कि मैं कौन हूँ, मेरा मज़ाक उड़ा रहे हो? पीछे के घोड़े पर स्थित लाश को देख रहे हो न? उसका सिर

पीछे की ओर कैसे घुमाया गया है? तुम्हारी भी यही हालत होगी, समझे!''

यह उत्तर सुनकर कालीवर्मा उत्साह में आ गया। बधिक की ओर अपने घोड़े को दौड़ाकर तलवार से उसके कंधे पर थपथपाते बोला, ''बधिक! तुमने ईंट का जवाब पत्थर से दे दिया। लगे हाथ क्या तुम दुर्मुख के इन अश्विकों के सर भी काट डालोगे?''

''यह सब भल्लूक मांत्रिक की दया है। वे आदेश देंगे तो यह काम करने की मेरी भी बड़ी इच्छा है। इधर एक-दो हफ़्तों से मेरे परशु ने खून का स्वाद नहीं चखा है।'' बधिक ने उत्तर दिया।

इतने में दुर्मुख के अश्विकों में से एक ने अपने घोड़े को ललकारकर ऊँचे स्वर में कहा, ''ये लोग कोई मानव भक्षी मालूम होते हैं। मनुष्य का बध करके उसके शव को उल्टी दिशा में घोड़े से बांधकर नगर में ले जा रहे हैं।''

भल्लूक मांत्रिक ने चीत्कार करते उन अश्विकों की ओर देख कालीबर्मा से कहा, ''कालीबर्मा! हम इन कमबख़्तों के गप्पों को कब तक सुनते जायेंगे?''

इसके दूसरे ही क्षण कालीवर्मा तलवार खींचकर कहा, ''अबे दुर्मुख के सेवको! तुम लोग चुपचाप अपने रास्ते जाओगे या अपने सर कटाने की इच्छा रखते हो?''

इस पर मंत्री जीवगुप्त के साथ आये दो घुड़ सवार की ओर तलवार खींचकर दुर्मुख के सैनिकों को ओर पने घोड़ों को बढ़ाते हुए बोले, ''महाशय, यह काम हमें सौंप दीजिए! ये घमण्डी लोग अंट-संट बकते जा रहे हैं!'' ये शब्द कहते वे उन पर टूट पड़े।
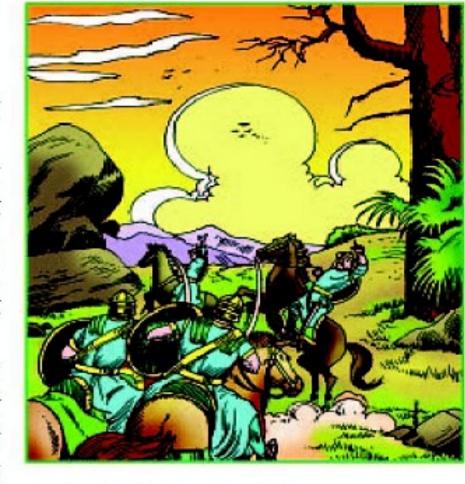
दुर्मुख के अश्विक भी तलवार खींचे आत्मरक्षा का प्रयत्न करते और भागते हुए बोले, ''हमारे महाराजा दुर्मुख समीप के आम के एक बाग में डेरा डाले हुए हैं। वे तुम सब लोगों के सर कटवा डालेंगे।''

इस पर जीवगुप्त के दोनों घुड़ सवार उन्हें दूर तक भगा कर वापस लौट आये।

इतने में जीवगुप्त का एक सेवक चिल्ला उठा, ''महामंत्री जी! इस बार दुश्मन के दस अश्वारोही हम पर हमला करने आ रहे हैं।''

तभी सचमुच दस अश्वारोही उनके समीप आये। मगर उन लोगों ने तलवार खींचकर बार

नहीं किया, बल्कि थोड़ी दूर पर ही रुक गये। उनमें से एक व्यक्ति ने एक लंबा पत्र निकालकर ऊँचे स्वर में यों पढ़ा : ''राजा का यह आदेश है कि यहाँ पर जितने भी लोग हैं, वे सब तुरंत रवाना होकर आम के वन में डेरा डाले हुए महाराजा दुर्मुख की सेवा में हाज़िर हो जायें।''

यह आदेश सुनकर सभी लोग विस्मय में आ गये। भल्लूक मांत्रिक ने मंत्री जीवगुप्त को अपने भैंसे के वाहन को दुर्मुख के अश्विकों की ओर बढ़ाने का आदेश दिया, फिर दुर्मुख के सैनिकों से कहा, ''दुर्मुख जैसे महाराजा का आदेश पालन न करें, यह कैसे होगा? तुम सबलोग आम के बाग की ओर चलो।''

कालीवर्मा ने अचरज में आकर पूछा, ''गुरुजी! आप यह क्या कर रहे हैं?''

''कालीवर्मा, शांत हो जाओ। तुम खुद देख लोगे न?'' मांत्रिक ने कहा।

इस पर दुर्मुख के घुड़ सवार उन्हें सीधे आम के बगीचे में ले गये। राजा दुर्मुख एक ऊँचे आसन पर आसीन था। उसके आसन के दोनों तरफ़ दो खड्गधारी सैनिक और थोड़ी दूर पर मंत्री और सलाहकार खड़े थे। भल्लूक मांत्रिक तथा उनके साथ आये हुए लोगों को देख दुर्मुख ने आँखें लाल करके कहा, ''अरे दुष्टो! तुम लोगों के बारे में मैं सारी बातें जानता हूँ। मैं बधिक के साथ तुम सबके सर कटवाने जा रहा हूँ। सबसे अंत में कालीवर्मा का सर कटवाया जाएगा।''

दुर्मुख के मुँह से ये शब्द सुनकर भल्लूक मांत्रिक चिल्ला उठा, ''हे आदि भल्लूक!'' फिर भैंसे से उतर पड़ा और थर - थर काँपनेवाले बधिक से बोला, ''अरे बधिक! इसी क्षण में इस बात का फ़ैसला हो जाएगा कि तुम्हारा सिर दुर्मुख काटेगा या उसका सर तुम काटोगे?'' यों कहते मंत्र-दंड के छोर पर स्थित भल्लूक मूर्ति से साथ उसकी पीठ का स्पर्श किया।

दूसरे ही क्षण बधिक काले भल्लूक की आकृति में परशु को घुमाते घोड़े पर से उछलकर कूद पड़ा और भयंकर रूप से चिल्लाते राजा दुर्मुख की ओर दौड़ा। *(क्रमशः)*

राजा विक्रम और वेताल की नई कथाएँ

# अनंत की आकांक्षा

धुन का पक्का विक्रमार्क पुनः पेड़ के पास गया। पेड़ पर से शव को उतारा, उसे अपने कंधे पर डाल लिया और यथावत् श्मशान की ओर अग्रसर होने लगा। तब शव के अंदर के बेताल ने कहा ''राजन्, तुम विद्यावान हो, अनुभवी हो, फिर भी इस श्मशान में अनावश्यक ही कष्ट झेल रहे हो। मेरी समझ में नहीं आ रहा है कि तुम्हें ऐसा क्यों करना पड़ रहा है । कहीं ऐसा तो नहीं कि कोई कपटी, स्वार्थी अपना उल्लू सीधा करने के लिए तुमसे यह सब कुछ करा रहा हो। तुम्हारी अच्छाई का फ़ायदा उठा रहा हो। ऐसे छलियों के चंगुल में फँसकर अनंत ने भी बहुत बड़ी भूल की। अपने कार्य की सिद्धि के बाद भी अविवेक का शिकार होकर
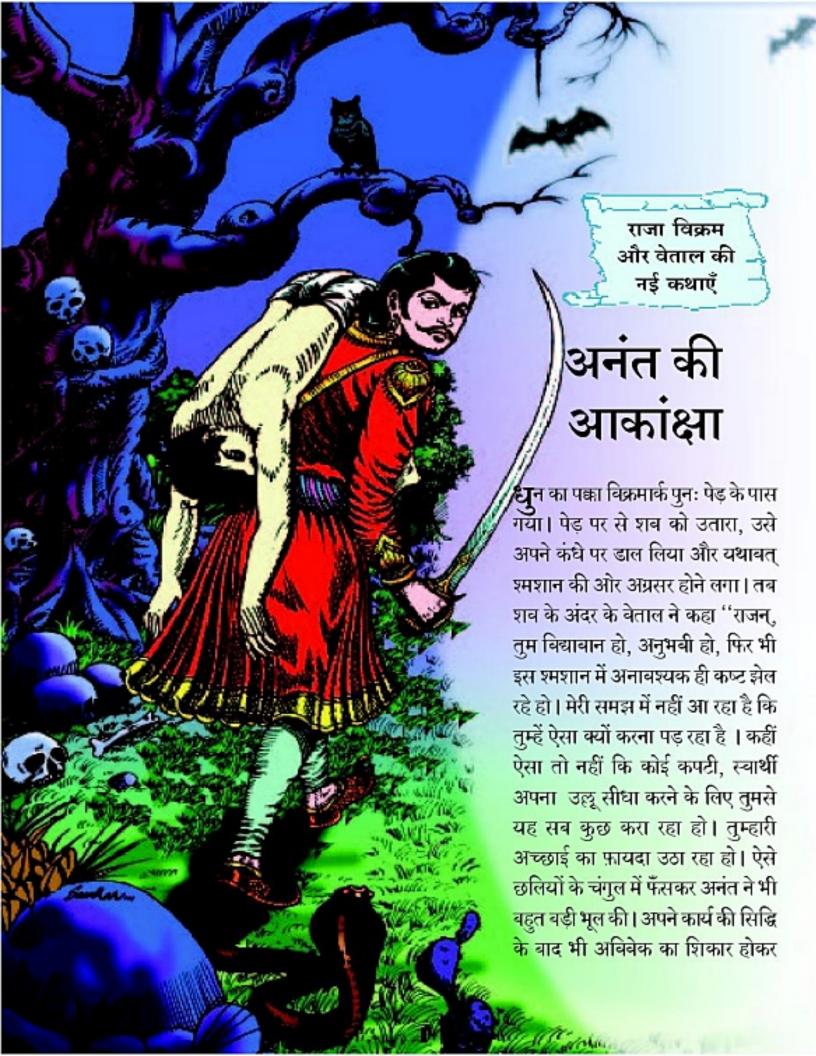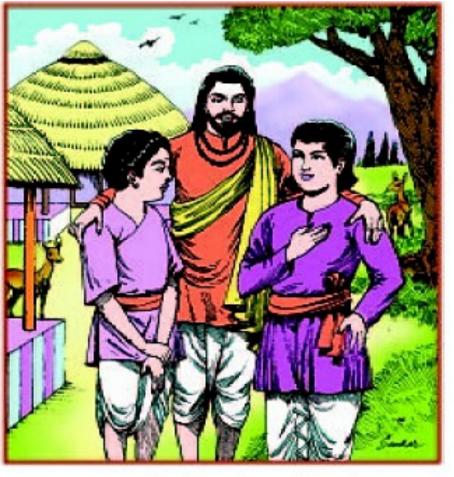
अपना ही परोपकार के बाद भी भूल बैठा। अपनी थकावट दूर करते हुए उसकी कहानी ध्यानपूर्वक सुनो।'' फिर बेताल अनंत की कहानी यों सुनाने लगा:

बहुत पहले की बात है। सत्कीर नामक राजा मंदारक देश का शासक था। विरज उसका इकलौता बेटा था। सत्कीर ने अपने बेटे विरज को बचपन में ही शिक्षा प्राप्त करने के लिए गोविल नामक गुरु के गुरुकुल में भेजा।

गुरुकुल में कुल दस विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त कर रहे थे। उनमें से अनंत के सिवा शेष सभी विद्यार्थी विरज के प्रति आवश्यकता से अधिक आदर दिखाते थे, क्योंकि उन्हें डर था कि राजकुमार कहीं उनसे नाराज़ न हो जाएँ और कोई दण्ड दे न बैठें। इसी डर के मारे वे उनसे थोड़ा दूर ही रहते थे। पर अनंत ने पहले ही दिन उससे दोस्ती कर ली। शांत और नम्र स्वभाव का अनंत, विरज को अच्छा लगा। इसलिए उनकी मैत्री दिन व दिन बढ़ती गयी।

पर विरज में राजकुमार होने का गर्व भरा हुआ था। साथ ही वह मूर्ख भी था। इस तैश में आकर वह कभी-कभी अनंत पर हुक्म चलाने की कोशिश भी करता था। फिर भी अनंत नाराज़ नहीं होता था और उससे मैत्रीपूर्वक व्यवहार करता रहता था।

गुरु से सिखाये जानेवाले पाठ विरज की समझ में नहीं आते थे। पर वह गुरु के सामने यह प्रकट होने नहीं देता था। फ़ुरसत के समय वह ये पाठ अनंत से सीख लेता था। अनंत काफ़ी दिलचस्पी लेकर उसे पाठ पढ़ाता था। अगर ज़रूरत पड़े और उसे लगता कि विरज ने ठीक तरह से समझा नहीं हैं तो दो-तीन बार दोहराता भी था।

यों विरज पढ़ाई में दिलचस्पी दिखाने लगा। जब गुरु गोविल ने देखा कि शिक्षा के प्रति विरज की अभिरुचि बढ़ती जा रही है तो उसे प्रोत्साहन देने के उद्देश्य से उसकी प्रशंसा के पुल भी बांधने लगे। पहली-पहली बार जब गुरु ने उसकी प्रशंसा की तब उसने अनंत से कहा, ''अनंत, गुरु ने आज मेरी प्रशंसा की और इसका पूरा श्रेय तुम्हीं को जाता है। तुम्हारी भलाई कभी नहीं भूलूँगा। जैसे ही मैं इस देश का राजा बनूँगा, तुम्हें मैं अपना प्रधानमंत्री नियुक्त करूँगा।''

विरज की बातों पर अनंत बेहद खुश हुआ। गुरु गोविल ने यह विषय जानकर विरज की अत्यधिक प्रशंसा करते हुए कहा, ''पुत्र, मनुष्य को पशुओं से अलग करनेवाले उत्तम गुणों में से

एक है, कृतज्ञता। तुम्हारी उदारता प्रशंसनीय है। अनंत के प्रति तुम्हारी उदारता तुम्हारी महानता का चिह्न है, तुम्हारे विशाल हृदय का दर्पण है। तुमने अनंत को जो वचन दिया, उसे हर हालत में निभाना।''

विरज ने ''हाँ'' के भाव में सिर हिलाया। पर इसके बाद जो हुआ, वह बिलकुल विपरीत ही हुआ। शिक्षा के क्षेत्र में विरज आगे बढ़ता गया, पर साथ ही साथ उसका अहंकार भी बढ़ता गया। जब उसका विद्याभ्यास पूरा होने जा रहा था, तब तक सबको मालूम हो गया कि उसने अपना वचन भुला दिया।

गुरुकुल में शिक्षा की समाप्ति होते ही गुरु गोविल से अनंत ने कहा, ''गुरुवर, अब भी मेरी विद्या तृष्णा जैसी की तैसी है। आप अगर अनुमति दें तो अरावली पर्वत के पास के कृष्णचंद्र जी के गुरुकुल में और कुछ समय तक विद्याभ्यास करूँगा। उसके बाद ज़रूरत पड़े तो विरज को उसके वचन की याद दिलाऊँगा।''

गोविल ने खुश होते हुए कहा, ''उस महान गुरु का शिष्य बनोगे तो तुम्हें संपूर्ण योग्यता प्राप्त होगी। तुम्हारा जीवन सार्थक होगा। जाओ, तुम्हें मेरा आशीर्वाद।''

विरज ने भी गुरु दक्षिणा चुकायी और राजधानी लौटा। यों छः साल गुज़र गये। विरज का राज्याभिषेक संपन्न हुआ। जैसे ही वह राजा बना, उसने सुप्रतीक को प्रधान सलाहकार के पद पर नियुक्त किया, जो उसकी चापलूसी करता था, हाँ में हाँ मिलाता था। अब शासन के
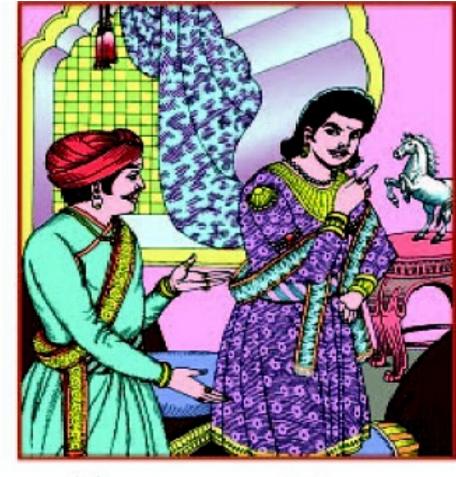
व्यवहारों में उस प्रधान सलाहकार की ही बात चलने लगी, वही वेद वाक्य बन गया।

सुप्रतीक और राजा ने मिलकर नवीन शासन प्रणाली के नाम पर शासन-पद्धति में अनेक परिवर्तन किये, सुधार ले आये। जनता इन्हें समझ नहीं पायी, वे असमंजस स्थिति में पड़ गये। उनके इस काम से जनता असंतुष्ट हुई और खुलकर राजा का विरोध करने लगी। इस स्थिति का फ़ायदा उठाने के लिए शत्रु राजा तैयार बैठा था। विरज को गुप्तचरों से मालूम हुआ कि शत्रु राजा किसी भी क्षण उसके राज्य पर हमला करने के लिए सन्नद्ध बैठा है। विरज घबरा गया। उसने सुप्रतीक से सलाह मांगी।

सुप्रतीक इसे कोई बड़ी समस्या मानने के लिए तैयार नहीं था। इस समस्या की गहराई में गये बिना ही वह कहने लगा, ''डर किस बात की महाराज? ज्यादा से ज्यादा वेतन देंगे और जवानों
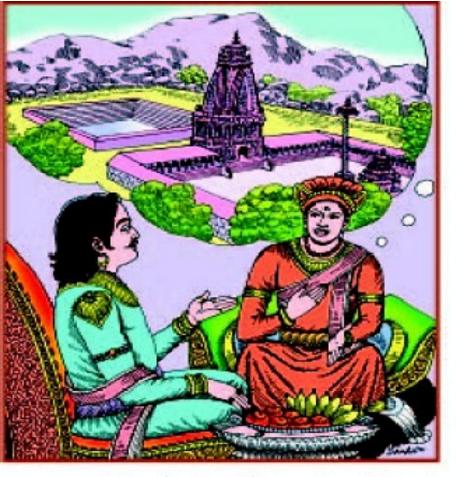
को सेना में भर्ती कर लेंगे। शत्रु के हमले के पहले ही हम उस पर हमला कर देंगे। वह राज्य भी हमारा हो जाए तो आपकी कीर्ति चारों दिशाओं में फैल जायेगी।''

''तुम तो ऐसा बोल रहे हो, मानो यह बायें हाथ का खेल है ! क्या तुम जानते नहीं, हमारे खज़ाने में इतनी धन-राशि नहीं हैं !'' राजा ने कहा।

इस पर सुप्रतीक ने ठठाकर हँसते हुए कहा ''खज़ाने को भरने के लिए एक उपाय है। दक्षिणी पर्वत के बारे में आप तो जानते हैं।''

विरज को दक्षिणी पर्वत के बारे में मालूम था। मंदारक देश के उत्तरी भाग में जो बहुत बड़ा पर्वत है, उसे दक्षिणी पर्वत कहते हैं। उस पर्वत के ऊपर एक प्राचीन मंदिर है, जिसके मुख मंडप के पास देवनागरी लिपि में लिखा गया एक शिला लेख है। मंदिर के सामने के सरोवर के बीचों बीच तेज़ी से घूमनेवाला एक भंवर है। मंत्र-तंत्र का शास्त्रज्ञ, साहसी या कोई निस्वार्थ युवक उस भंवर में प्रवेश करके वहाँ के रक्षक यक्षमाया को जीत पायेगा तो उसे नवनिधियाँ प्राप्त होंगी। उसे पराजित होने पर वह नरक कूप में ढकेल दिया जायेगा। उस शिला लेख पर ये विवरण उत्कीर्ण हैं।

सुप्रतीक की बातों से विरज को ये बातें याद आ गईं, पर उसने नीरस स्वर में कहा, ''दक्षिणी पर्वत के बारे में जानने मात्र से क्या फ़ायदा होगा ! जान पर खेलकर उस सरोवर में कूदना मेरे बस की बात नहीं है।''

सुप्रतीक ने हँसते हुए कहा, ''प्रभु, मैं थोड़े ही आपको वहाँ जाने के लिए कह रहा हूँ। अनन्त नामक एक युवक हमारे राज्य में नया-नया आया हुआ है । सुनने में आया है कि अरावली पर्वत प्रांत के कृष्णचंद्र गुरु से उसने मंत्र शास्त्र का गंभीर अध्ययन किया। वह उस शास्त्र में पारंगत है। अन्य विद्याओं में भी वह निष्णात है। वह हमारे श्रेष्ठ व्यापारी कस्तूरी के यहाँ अतिथि बनकर ठहरा हुआ है। यह भी सुनने में आया है कि वह बड़ा ही साहसी और निस्वार्थ है। राज्य के कल्याण के लिए उससे दक्षिणी पर्वत जाने को कहेंगे। निधियों सहित वह अगर लौटकर आयेगा तो उससे कहेंगें कि उसे ढेर भर का सोना देगें। कहिये, आपकी क्या राय है ?''

अनंत का नाम सुनते ही विरज चौक पड़ा। क्षणभर सोचता रहा और फिर सुप्रतीक के प्रस्ताव

को उसने स्वीकार कर लिया। दूसरे ही क्षण अनंत को संदेश भेजा गया।

अनंत के आते ही बिरज ने बड़े ही प्रेम से उसे गले लगाया। फिर उसने दक्षिणी पर्वत के बारे में, बताया और पूरा विवरण दिया। अनंत ने ध्यान से उसकी बातें सुनने के बाद कहा, ''राजन, हम एक-दूसरे के बारे में भली-भांति जानते हैं। आपकी इच्छा के अनुसार दक्षिणी पर्वत अवश्य जाऊँगा।''

अपने बचन के अनुसार शुभमुहूर्त पर अनंत दक्षिणी पर्वत गया और मंत्रों का जप करके सरोवर में उतरा।

बिरज भी अनंत के साथ-साथ आया था। बह सरोबर के किनारे बैठकर उसका इंतज़ार करने लगा। थोड़े समय के बाद उसने देखा कि अनंत सरोवर से बाहर आ रहा है और उसका मुख प्रकाशमान है, कांति से चमक रहा है। बिरज तुरंत अनंत के पास गया और उत्कटतापूर्वक पूछने लगा, ''अनंत, निधि मिल गयी? कहाँ है?''

अनंत ने मंद मुस्कान भरते हुए कहा, ''चलिये, आपको दिखाता हूँ। कोई ख़तरा नहीं है। डरने की कोई बात नहीं।'' कहते हुए उसने बिरज का हाथ पकड़ लिया और पुनः सरोबर में उतरा। उस सरोवर के बिलकुल तले सूर्य किरणों की तरह चमकते हुए नवरत्नों का ढ़ेर उन्हें दिखायी पड़ा। बिरज मंत्रमुग्ध होकर देखता रह गया।

तब अनंत ने शांतस्वर में कहा, ''प्रभु, मैंने ये जो अमूल्य निधियाँ पायी हैं, उन्हें आपके चाहे अनुसार देश के कल्याण के लिए इसी क्षण आपके
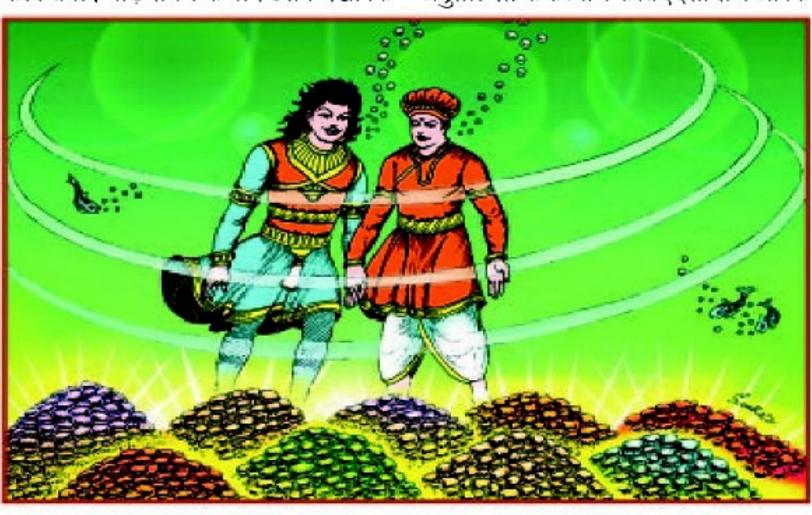
सुपुर्द करूँगा। पर प्रतिफल स्वरूप में मैं सोना नहीं चाहता।'' विरज ने चकित होकर पूछा, ''तो फिर क्या चाहिये ?''

''आपने गुरुकुल में वर्षों पूर्व एक वचन दिया था। उसके अनुसार मुझे अपना प्रधान मंत्री नियुक्त कीजिये''। अनंत ने गंभीर स्वर में कहा।

यह सुनकर विरज अवाक् रह गया। उसने अनंत के पैरों का स्पर्श करते हुए गदगद स्वर में कहा, ''महानुभाव, आप साधारण मानव नहीं हैं। इस क्षण से आप ही मेरे प्रधान मंत्री हैं। आपकी अनुमति के बिना मैं सांस भी नहीं लूँगा।''

वेताल ने कहानी बताने के बाद कहा, ''राजन्, निधि पाने के पीछे विरज का स्वार्थ सुस्पष्ट है। लेकिन विद्यावान व साहसी अनंत का व्यवहार कुछ अटपटा लगता है, अविवेकपूर्ण भी। अगर वह सचमुच ही निस्वार्थ है तो उसे चाहिये था कि निधियों को विरज को चुपचाप सौंप दे और बिना प्रतिफल मांगे चला जाए। अन्यथा निधियों में से अपना हिस्सा मांगे। वह बखूबी जानता था कि विरज कपटी है और उसके वचनों का कोई मूल्य नहीं हैं तो उसने प्रधान मंत्री बनने की ख्वाहिश क्यों जाहिर की। मेरे इन संदेहों के समाधान जानते हुए भी चुप रह जाओगे तो तुम्हारे सिर के टुकड़े-टुकड़े हो जायेंगे।''

विक्रमार्क ने कहा, ''पहले ही देश की भलाई चाहनेवाला अनंत अवश्य ही निस्वार्थ है। इसी वजह से उसने गुरुकुल में भावी महाराज की सहायता की। विरज कपटी, स्वार्थी हो सकता है। परंतु उस समय की देश की परिस्थितियों को दृष्टि में रखते हुए अनंत ने प्रधान मंत्री का पद मांगा। एक तो ख़ज़ाना खाली था, जिसपर शत्रु राजा उसके देश पर आक्रामण करने के लिए तैयार बैठा था, तब क्या उसका यह कर्तव्य नहीं बनता कि देश की वह रक्षा करे? उसकी इस मांग में उसकी देशभक्ति और राजनैतिक सूझ-बूझ निहित हैं। इसमें विवेक और अविवेक का कोई सवाल ही नहीं उठता।''

राजा के मौन-भंग में सफल वेताल शव सहित ग़ायब हो गया और फिर से पेड़ पर जा बैठा।

***(आधार : कृष्ण प्रसाद की रचना)***

# समाचार - झलक

## आबादी में दो की बढ़ोत्तरी

सिंगापुर के चिड़िया घर में, संकटापन्न जाति की संख्या में एक और बढ़ोत्तरी हुई है. जो संयोगवश डोन लंगूर नस्ल को जन्म देनेवाला विश्व में पहला चिड़ियाघर है । चिड़ियाघर ने एक बच्चे के जन्म की खबर भेजी है - जो कुछ ही दिनों के अन्दर जन्मा दूसरा बच्चा है। यह जाति प्राय: वियतनाम और लाओस में पायी जाती है । लंगूर के दोनों बच्चे किसी अन्य कारण से भी भारी संख्या में लोगों को आकर्षित कर रहे हैं । चिड़िया घर के अधिकारी उन बच्चों के नाम की खोज में हैं और इसके लिए उन्होंने प्रतियोगिता की घोषणा की है ।

## रेलगाड़ी में काव्य-पाठ

कुछ दिन पहले ही जमीन के आखिरी छोर, कन्याकुमारी से नई दिल्ली तक के लिए एक नई रेलगाड़ी आरम्भ की गई है, जिसका नाम तिरुकुरल एक्सप्रेस है ।

यह रेलगाड़ी चौथे दिन राजधानी पहुँचती है । उद्‌घाटन यात्रा में रेलगाड़ी में कन्याकुमारी के निकटस्थ कोलातूर की रहनेवाली पाँच वर्षीय पी.प्रतीक्षा भी सवार थी जिसने यात्रा के दौरान सभी बीस से कुछ अधिक डिब्बों में जाकर यात्रियों के कल्याणार्थ कुरल की कविताओं का पाठ किया । यात्रा की समाप्ति तक उसने २००० वर्ष पूर्व तिरुवल्लुवर रचित तिरुकुरल के सभी १३३० दोहों का वाचन किया ।

भारत की पौराणिक कथाएँ - २२

# तीसरा वरदान

**मा**र्ग के किनारे वाली सराय में दो युवा मित्र गप्प कर रहे थे तभी एक अनजान व्यक्ति उसके पास गया। "क्या आप हीरे की इस अंगूठी को खरीदना चाहेंगे?" उसने पूछा।

दोनों में से एक, बिपुल, सुखी -सम्पन्न था, जबकि दूसरा, चन्द्रकान्त एक गरीब अध्यापक था। वह अंगूठी खरीदने में असमर्थ था। लेकिन बिपुल को अंगूठी सचमुच मूल्यवान लगी।

"तुम्हें यह अंगूठी कहाँ से मिली?" बिपुल ने पूछा।

"मैं तुम्हें अभी यह नहीं बताऊँगा। यदि तुम इसे नहीं खरीदना चाहते तो मैं इसे किसी जौहरी को बेच दूँगा। मुझे पैसे की अभी अत्यन्त आवश्यकता है, इसीलिए मैंने यह प्रस्ताव तुम्हारे सामने रखा।" अनजान आगन्तुक ने कहा।

बिपुल ने अज्ञात व्यक्ति को अपने साथ अपने घर पर आने को कहा। वह खुशी से बिपुल और उसके मित्र चन्द्रकान्त के साथ जाने लगा। बिपुल आगन्तुक के साथ बहुत घुलमिल गया और घर पहुँच कर उसे अंगूठी की कीमत दे दी।

लेकिन उसे तुरन्त जाने नहीं दिया। "शाम हो चुकी है। तुम्हें इतने पैसों के साथ रात में गली से गुजरना नहीं चाहिये", उसने समझाया। चन्द्रकान्त ने भी अपने मित्र की चेतावनी का समर्थन किया। आगन्तुक वहीं रात बिताने के लिए राजी हो गया।

चन्द्रकान्त के चले जाने पर बिपुल ने अपने अतिथि को स्वादिष्ट भोजन कराया और शराब पिलाई। आगन्तुक अब लापरवाही से बात करने लगा। वह अपने मेज़बान से इतना खुश हुआ कि
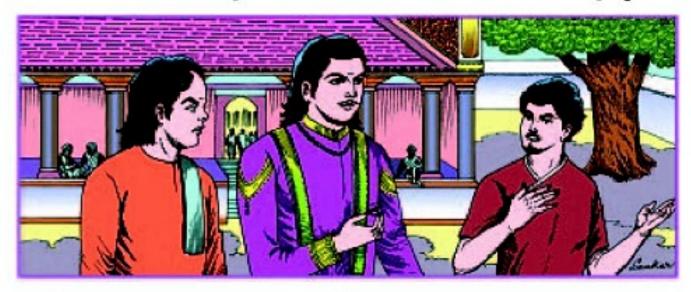
वह अंगूठी पाने का राज़ उगल पड़ा ।

जंगल में, जो शहर से बहुत दूर नहीं था, एक तांत्रिक रहता था । उसमें, यज्ञ समाप्त करने के बाद, जो वह हर महीने अमावस्या के मध्य में सम्पन्न करता था, किसी की इच्छा पूरी करने की अलौकिक शक्ति आ जाती थी । आगन्तुक ने उसे किसी तरह प्रसन्न कर लिया था । तांत्रिक ने यज्ञ में से, मंत्र पढ़ कर, एक चुटकी राख उसे दी और तीन पलक में तीन इच्छाएँ सोचने के लिए कहा । लेकिन हीरे की अंगूठी के अलावा वह कुछ और न सोच सका । जैसे ही अंगूठी प्रकट हुई, वह हकलाने लगा और समय गुजर गया । बाद में वह पछताने लगा कि उसने राज्य क्यों नहीं माँग लिया ।

प्रातः काल आगन्तुक जलपान के बाद प्रसन्नतापूर्वक चला गया ।

विपुल ने विश्वासपात्र मित्र चन्द्रकान्त को बुलाया । विपुल ने तांत्रिक के पास जाने का निश्चय कर लिया था । लेकिन अकेले जाने में डरता था । उसने चन्द्रकान्त से इस साहसिक कार्य में साथ देने के लिए अनुरोध किया ।

चन्द्रकान्त को इन सब चीजों में कोई रुचि नहीं थी । "विधाता ने तुम्हें बहुत दिया है । अब और क्या चाहिये? वास्तव में वाँछनीय वस्तु है - आन्तरिक शान्ति, ईमानदारी और सचाई से जीने का आनन्द ।"

"तुमने यह कैसे समझ लिया कि धन-दौलत के अतिरिक्त हमारी और कोई आकांक्षा नहीं है?" विपुल ने कहा ।

"देखो मित्र, किसी चीज़ को प्राप्त करने के लिए केवल दो ही सही मार्ग हैं । तुम या तो उसे प्राप्त करने के लिए काम करो अथवा वह अपने आप सहज ही तुम्हारे पास आ जाये । तुम्हारा तांत्रिक से कुछ माँगना इनमें से किसी श्रेणी में नहीं आता । अस्वाभाविक ढंग से प्राप्त की हुई चीज़ का परिणाम ऐसा हो सकता है जिसके लिए तुम्हें पछताना पड़ जाये ।" चन्द्रकान्त ने सावधान किया ।
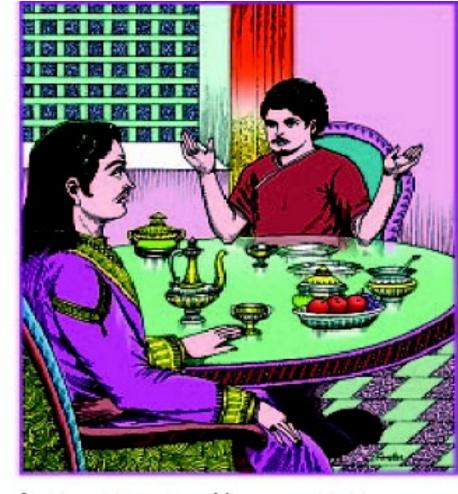
लेकिन विपुल तांत्रिक से मिलने के लिए हठ कर रहा था । चन्द्रकान्त ने कुछ तो सहानुभूति के कारण साथ दिया और कुछ इस भय से कि उसका मित्र कोई गलत कार्य न कर बैठे ।

चन्द्ररहित रात जंगल में उतरने लगी थी । तभी दोनों मित्रों ने जंगल में प्रवेश किया और तांत्रिक की कुटिया का पता लगाया । इन्हें यह देख कर आश्चर्य हुआ कि तांत्रिक उनके प्रति बहुत शिष्ट है और यह समझ कर कि ये मार्ग
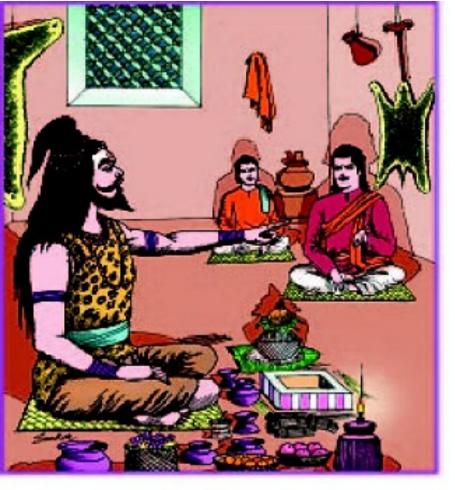
भटक गये हैं, उन्होंने इन्हें भोजन खिलाया । "तुम लोग इस कुटिया में रात बिता सकते हो । मैं यज्ञ करने जा रहा हूँ । जैसे ही अनुष्ठान खत्म होगा, मैं इस स्थान को छोड़ कर चला जाऊँगा ।" तांत्रिक ने उन्हें बताया ।

"लेकिन महानुभाव, आप जंगल को छोड़ कर क्यों जा रहे हैं?" विपुल ने पूछा ।

"लेकिन तुम्हें इसमें क्या परेशानी है? मेरे बच्चे ! लेकिन मुझे तुम्हें यह बता देने में कोई आपत्ति नहीं है कि मैं यहाँ हर अमावस्या की रात को किसी खास उद्देश्य से एक अनुष्ठान कर रहा था । आज की रात के यज्ञ के समापन के बाद मेरा उद्देश्य पूरा हो जायेगा ।" तांत्रिक ने समझाया ।

"क्या यह सच नहीं है कि आप किसी को चुटकी भर भस्म देते हैं तो मांगने पर उसकी तीन इच्छाएँ पूरी हो जाती हैं?"

इस प्रश्न पर तांत्रिक चिढ़ता हुआ बोला, "किसने कहा? शायद उस भोले-भाले ने, जिसे हीरे की अंगूठी मिली, हालांकि मैंने उसे इसके बारे में किसी से कुछ कहने के लिए मना किया था । हाँ, मैंने ही वह उसके लिए करुणावश होकर किया था ।" तांत्रिक ने कहा ।

आप क्यों नहीं वैसी ही दया मेरे ऊपर भी करें!" विपुल ने कहा ।

तांत्रिक हँसा । "मेरे बच्चे, तुम आदेश द्वारा किसी की दया के पात्र नहीं बन सकते । या तो कोई दया का अनुभव करता है या नहीं करता है । तुम्हारे प्रति दया करने का मेरे पास कोई कारण नहीं है ।" तांत्रिक ने उत्तर दिया ।

"लेकिन मेरे प्रति मेहरबानी करने से आप को कोई मूल्य नहीं देना पड़ेगा । इसलिए आप को इसमें आपत्ति या अनिच्छा क्यों होनी चाहिये ।" विपुल ने अधिकार जताते हुए कहा ।

"तुम्हें इसका भारी मूल्य देना पड़ सकता है! मैं चेतावनी देता हूँ, तुम मेरे यज्ञ की योजना में विघ्न पैदा न करो ।" तांत्रिक ने कहा ।

लेकिन जब तक आप मेरी इच्छाओं की पूर्ति नहीं करेंगे, तब तक मैं अनुष्ठान करने नहीं दूँगा । मैं व्यवस्था में विघ्न डालता रहूँगा और रात बीत जायेगी ।" विपुल ने तांत्रिक को धमकी दी ।

"सचमुच!" तांत्रिक गंभीर होकर बुदबुदाया ।

चन्द्रकान्त को यह बहुत कष्टकर लगा । "विपुल, भगवान के लिए कृपया तांत्रिक को परेशान न करो । यह तुम्हारे लिए बुरा होगा ।" उसने अपने मित्र को सावधान किया ।

"तुम बीच में न पड़ो । अलग हट जाओ । मैं

इस स्वर्ण अवसर को हाथ से नहीं जाने दूँगा।'' बिपुल ने दो टूक जवाब दे दिया।

चन्द्रकान्त कुछ कदम पीठे हटकर झोंपडी के अन्दर किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो खड़ा रहा। उसने देखा कि तांत्रिक ने अग्नि प्रज्वलित की और कुछ श्लोकों का उच्चारण किया। कुछ समय के बाद तांत्रिक ने एक चुटकी राख ली और बिपुल की तलहथी पर रख दी। यद्यपि चन्द्रकान्त ने नहीं सुना कि बिपुल ने किस प्रकार के बरदान की कामना की लेकिन उसने तांत्रिक के चेहरे पर क्षण भर के लिए उपहास की एक झलक देखी।

''मैंने तुम्हारी इच्छाएँ पूरी होने दीं, क्योंकि मैं तुम्हें इनकार नहीं कर सकता था अथवा धोखा नहीं दे सकता था, क्योंकि मुझे अपने उद्देश्य की सिद्धि के लिए आज की रात सत्यनिष्ठ रहना है। अब, चले जाओ और मुझे शान्ति में रहने दो।'' तांत्रिक ने कहा।

बिपुल औपचारिक ढंग से झुका और उछलता हुआ अपने मित्र के पास आया। दोनों घर वापस आ गये।

दूसरे दिन प्रातःकाल नदी में स्नान के बाद गाँव के चौक पर वे खड़े हो गये। वहाँ बहुत से ग्रामीण किसी उत्सव के लिए एकत्र हो गये थे। बिपुल ने उन्हें तिरस्कार पूर्ण दृष्टि से देखते हुए अपने मित्र से कहा, ''ये सभी लोग हमारी प्रजा बननेवाले हैं, क्योंकि मैं राजा बनने जा रहा हूँ।''

''क्या यही वरदान तुमने माँगा?'' चन्द्रकान्त ने पूछा।

''यह तीन वरदानों में से एक है।''

''दूसरे वरदान तुम्हारे क्या हैं?''

''वे ये कि मैं कभी किसी रोग का शिकार न बनूँ और कभी बृद्ध न होऊँ।''

''लेकिन तुमने दीर्घ जीवन की कामना क्यों नहीं की?''

''तुम कितने मूर्ख हो! मैं बूढ़ा न होऊँ का क्या यह अर्थ नहीं है कि मैं सदा युवा रहूँगा।''

अचानक बिपुल का चेहरा पीला पड़ गया। उसने अपनी छाती जकड़ ली और फिर गिर पड़ा। ''मैं कितना मूर्ख था!'' वह बुदबुदाया। मैंने कभी सोचा नहीं था कि हमारे बरदान का अर्थ यह होगा कि मैं बूढ़ा होने तक जीवित ही नहीं रहूँगा।''

फिर कराहता हुआ उसने अन्तिम सांस ले ली।

*-विश्ववसु*

# अठारह की पहेली

सन् १९४५ में ३० जुलाई को हॉलीवुड में अभी सूर्योदय हुआ ही था कि अचानक एक झाड़ी से दो व्यक्ति निकले और एकान्त सड़क पर जाती हुई एक छोटी वैन को उन्होंने रोक लिया। एक व्यक्ति लम्बा, दुबला और घबराया हुआ था, दूसरा नाटा, हट्ठा-कट्ठा और शान्त था। उन्होंने वाहन के दोनों सवारियों को बन्दूक की नोक पर बाहर निकाला, उनकी आँखों और मुख पर पट्टी बाँधी और पास के एक वृक्ष के साथ उन्हें बाँध दिया।

वे कौन थे और क्या करना चाहते थे? उन्होंने वैन से जल्दी-जल्दी सामान उतारा - चाँदी के सिक्कों की छः बोरियाँ और ताजे डॉलर के नोट्स से भरा गत्ते का एक बक्सा। फिर थोड़ी दूर पर खड़ी एक कार में उन्हें लादा और तेजी से जाते हुए सुबह के कुहासे में खो गये।

दिन के उजाले में यह एक दुस्साहस पूर्ण डकैती थी। वैन हॉलीवुड स्टेट बैंक की थी। शीघ्र ही वे दोनों कुछ राहगीरों की मदद से किसी तरह बन्धन से मुक्त हो गये। वे चकित और किंकर्त्तव्यविमूढ़ थे। सब कुछ इतनी जल्दी हो गया कि वे अपनी रक्षा नहीं कर सके। वे बहुत दुखी थे, क्योंकि वे लॉक हीड कम्पनी को अपने कर्मियों को वेतन देने के लिए पैसा सौंपने के अपने कर्तव्य का पालन नहीं कर सके।

डाकुओं ने गंभीर अपराध किया था। उन पर अपहरण और चोरी का आरोप था। चोरी का माल बरामद करने के लिए मुकदमे को जल्दी से जल्दी सुलझाने की आवश्यकता थी। यह पुलिस और जासूसों के लिए एक भारी चुनौती थी।

क्या अपराधियों ने अपने पीछे कोई संकेत छोड़ा था? दर्जनों लोगों से पूछताछ की गई। बैंक के दोनों कर्मचारियों के सवाल किये गये। आँख पर पट्टी बाँधते समय एक नाटे हट्टे-कट्टे डाकू की कमीज़ पर एक ने बैज देखा था।
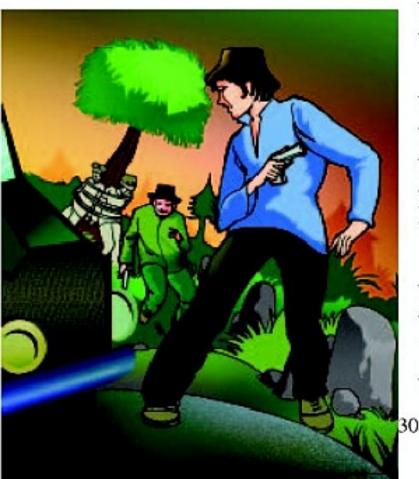
यह लॉकहीड कम्पनी का चिह्न था। स्पष्ट है कि उसने यह दिखाने के लिए पहना था कि वह उस कम्पनी में काम करता है।

एक दिन एक पुलिस अधिकारी को एक फेंकी हुई कार मिली। कार के अन्दर फटे कागज का एक टुकड़ा मिला जिस पर एक नाम और पता लिखा था। शीघ्र ही पुलिस को वह पता मिल गया और पुलिस ने उसका दरवाजा खटखटाया। एक औरत ने दरवाजा खोला जो अपने घर पर पुलिस को देख कर हैरान थी।

''हम लोग कुछ जाँच-पड़ताल करने आये हैं,'' उन लोगों ने कहा।

''शौक से करें। आप का स्वागत है'', अधेड़ उम्र की महिला ने कहा जिसका नाम श्रीमती एबलार्द था।

घर की तलाशी के बाद जासूसों ने बाग में देखा जहाँ एबलार्द के बच्चे गेंद खेल रहे थे। अचानक गेंद कम्पाउण्ड के अन्त में एक शेड के दरवाजे के नीचे से लुढ़क कर चली गई। बच्चे पीछे-पीछे दौड़े किन्तु दरवाजेपर ताला लगा था।

एक अधिकारी ने पूछा, 'गैरेज में क्या है?''

''उसे पिछले कुछ सप्ताहों से दो युवकों को किराये पर दिया गया है।'' श्रीमती एबलार्द ने बताया। ''लेकिन वे कई दिनों से लौट कर नहीं आये हैं।

उत्सुक अधिकारियों ने शेड का दरवाजा तोड़ कर खोला। बच्चे अपनी गेंद पाकर बड़े खुश हुए। लेकिन जासूसों को और ज्यादा खुशी हुई। क्योंकि उनके सामने जमीन पर एक कमीज़ पड़ी थी जिस पर लौकहीड का बैज, एक स्वचालित राइफल और बैंक के दोनों कर्मचारियों के रिवाल्वर्स पड़े थे।

पुलिस अधिकारी बैज को लौकहीड कारखाने में ले गये। लेकिन जाँच के बाद पता चला कि उस पर अंकित नम्बर जाली है और कर्मचारियों के नाम से मेल नहीं खाता। डाकुओं ने बड़ी चतुराई से असली नम्बर को मिटा दिया था और उस पर खास कलम से जाली नम्बर लिख दिया था। लेकिन वैज्ञानिक प्रयोगशाला में पराबैंगनी प्रकाश के नीचे बैज में कुछ चित्र दिखाई पड़े। वे असली मुद्रित

बाद सड़क के किनारे की एक छोटी सराय में पुलिस ने जॉनसन को धर दबोचा । उसी शाम को उसी होटल के आस पास हार्डी मंडराता पाया गया । दोनों को, अपने को निर्दोष बताने के बावजूद, जेल में डाल दिया गया ।

डकैती के पैसों के बारे में पूछे जाने पर उन्होंने पहले बताया कि उन्हें कुछ नहीं मालूम है । बाद में उन्होंने कहा कि वे जान दे देंगे लेकिन यह नहीं बतायेंगे कि धन कहाँ छिपाया गया है । लेकिन एक रात को पुलिस को जॉनसन के पलंग के नीचे पानी भरा एक पात्र मिला। इसमें एक पुराना भीगा हुआ डॉलर का नोट तैर रहा था।

अंकों के अवशेष थे। शीघ्र ही पुलिस लॉकहीड कारखाने के कर्मचारियों के रिकार्ड्स की जाँच-पड़ताल करने लगे।

उन्हें पता चला कि पुराना नम्बर एक लम्बे, पतले, विचलित स्वभाववाले कर्मचारी का था जिसका नाम जॉनसन था । ऐसा लगता था जैसे हार्डी से उसकी अच्छी दोस्ती थी जो नाटा, गठीला और शान्त स्वभाव का था । वह भी कम्पनी का एक कर्मचारी था। आखिरकार भेद खुल गया। अपराधियों का पता चल गया ।

लेकिन चोर-मित्र बहुत पहले कम्पनी छोड़ चुके थे । अब वे कहाँ हो सकते हैं? कारखाने के रेकार्ड्स के फोटो के साथ एक दिन दोपहर के

इस बेढंगे प्रयोग का क्या अर्थ हो सकता है? क्या यह धन के रहस्य का संकेत है? शायद चोरी का माल किसी नम स्थान पर छिपाया गया है । इसलिए अपराधी यह जानना चाहते थे कि नोट को सड़ने में कितने दिन लगेंगे।

दोनों डाकुओं को अलग-अलग सेल में रखा गया । लेकिन वे अक्सर एक गार्ड की सहायता से अपनी कुछ टिप्पणियों का आदान-प्रदान किया करते थे । किसी प्रकार इनके अधिकांश सन्देश जासूसों के हाथ लग गये ।

इनके कुछ सन्देशों में संख्या '१८' और 'पेपर' शब्द की चर्चा थी। एक सन्देश में लिखा था: ''यदि हम लोग अधिक दिनों तक जेल में

बन्द रहे तो पेपर सड़ जायेगा । दूसरा सन्देश इस प्रकार था: ''मेरी छोटी बहन उसे ला सकती है, लेकिन वह कैसे....तक पहुँच पायेगी ।''

क्या ''पेपर'' शब्द का अर्थ धन था? यदि हाँ तो धन उस लड़की की पहुँच से परे बहुत नम स्थान में छिपाया गया था । लेकिन अंक '१८' का अर्थ क्या हो सकता था? क्या रास्ते की पहचान के लिए यह संख्या दी गई थी?

पुलिस तथा जासूस अधिकारी गणों को शीघ्र ही एक ऐसे मार्ग का पता चला जिस पर चिह्न के रूप में एक पत्थर रखा हुआ था और उस पर '१८' लिखा हुआ था । वहाँ से एक तंग पगडंडी तार के १० फुट ऊँचे एक घेरे तक जाती थी जो एक पुराने कब्रगाह के चारों ओर लगा हुआ था ।

एक अधिकारी ने अपना मनोभाव प्रकट किया, ''सचमुच! कब्र के पत्थर को याद रखना एक आसान चिह्न है!''

''तुम ठीक कहते हो! एक छोटी लड़की के लिए इतना ऊँचा घेरा पार करना बड़ा कठिन होगा ।'' दूसरे ने अपना विचार प्रकट किया ।

पहेली के बिखरे टुकड़े अब एक जगह पर एकत्र होने लगे । अधिकारियों ने समय नष्ट नहीं किया और कब्र की अनन्त पंक्तियों के बीच कोई संकेत की तलाश करने लगे और शीघ्र ही उनकी नजर एक पर पड़ ही गई । एक सिपाही की कब्र शिला के पीछे, जो १८९८ में मरा था, मिट्टी, टहनियों तथा पत्तों का एक ढेर था!

उस स्थान को उन्होंने तुरन्त खुदवाया । काफी गहराई में कब्र शिला के नीचे चोरी का सारा धन गड़ा था - चाँदी के सिक्कों की छः बोरियाँ तथा डॉलर के ताजे नोटों से भरा गत्ते का एक बक्सा ! जेल में दोनों दोस्तों को इस बड़ी खोज के बारे में बताया गया । पहले तो उन्होंने विश्वास करने से इनकार कर दिया, किन्तु अन्त में उन्होंने न केवल विश्वास कर लिया, बल्कि अपने अपराध को स्वीकार भी कर लिया ।

# विदूषक का धर्मसंकट

एक समय विनयराज नाम का एक राजा था। वह शतरंज खेलने का शौकीन था। लेकिन राजा के विपरीत भला कौन खेलने का साहस करेगा, दरबारी विदूषक माधव को छोड़कर, जो राजा के साथ धृष्टता कर सकता था! दोनों बिसात के सामने घण्टों बिताते। और दाँव पर क्या लगाते? राजा बहुत मूल्यवान वस्तुएँ दाँव पर रखता था, कभी-कभी तो जानबूझ कर भी ऐसा करता था क्योंकि वह जानता था कि हार जाने पर भी आखिर वे वस्तुएँ उसके प्रिय विदूषक के पास ही तो जायेंगी। दूसरी ओर, माधव दाँव पर मामूली चीजें रखता था। राजा की रुचि इन चीजों से अधिक माधव से शतरंज की कुछ अच्छी चालें सीखने में थी। जब वे शतरंज के खेल में डूबे रहते तब वे दोनों इस बात को भूल जाते थे कि एक राजा है और दूसरा विदूषक; खेल की दृष्टि से वे दोनों बराबर थे।

एक दिन जब वे शतरंज खेल रहे थे तब विदूषक की युवा बहन मोहिनी को राजा के कक्ष में लाया गया। वह अपने भाई को लाने के लिए महल में गई थी। राजा उसके सौन्दर्य को देख कर मुग्ध हो गया। दूसरे दिन जब वे दोनों शतरंज खेलने बैठे तब राजा ने एक विचित्र प्रस्ताव रखा। क्या विदूषक दाँव पर अपनी बहन को रखेगा ताके जीत जाने पर राजा उसे अपनी रानी बना सके।
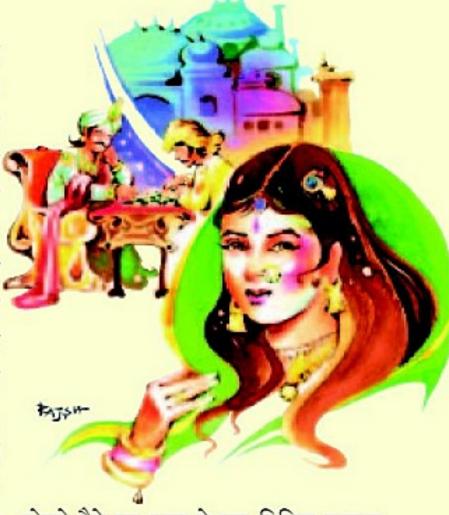
राजा ने दूसरे दिन दाँव पर एक पूरा नगर रख दिया जो जीत जाने पर विदूषक के अधीन हो जाता। माधव विदूषक होते हुए भी बहुत चतुर था। "हुजूर, हम दोनों के दाँव में मेल नहीं है। किसी नगर में मेरी रुचि नहीं है। इसलिए मेरी

सलाह है कि आप भी दाँव पर अपनी बहन को रखें ।''

विनयराज ने कुछ क्षणों तक सोचा । उसने पहले ही विदूषक की बहन को अपनी रानी बनाने का मन बना लिया था । ''ठीक है, मुझे तुम्हारा सुझाव मंजूर है।''

खेल शुरू हुआ । दोनों ने बड़े ध्यानपूर्वक खेला । राजा विदूषक से सीखे हुए चालों को याद कर और बहुत सोच-समझ कर अपनी चालें चलता था ।

जब उसने देखा कि उसने विदूषक को लगभग घेर लिया है तब उसके विचार भटकने लगे । वह उन आनन्ददायक क्षणों के सपने देखने लगा जो रानी बना लेने पर मोहिनी के साथ वह बितायेगा । वह असावधान हो गया और विदूषक खेल जीत गया । राजा को हार मान लेनी पड़ी ।

विदूषक प्रसन्न था कि उसे अपनी बहन से हाथ धोना नहीं पड़ा । हालांकि वह रानी बन सकती थी। ''अब महाराज, अपनी बहन को बुला दीजिये । मैं विवाह करके उसे अपनी पत्नी बनाऊँगा ।''

''क्या तुमने विवाह कहा मेरे दोस्त?'' राजा ने बल्कि अविश्वास के साथ पूछा । ''देखो भाई, मेरी एक ही बहन है और वह पहले ही यहाँ के सबसे धनी व्यापारी के साथ विवाहित है । माधव, तुम कुछ और माँग लो और मैं खुशी से दे दूँगा ।''

''लेकिन यह न्यायपूर्ण तो नहीं है न प्रभु!'' विदूषक ने विरोध लिया । ''आपने उसे दाँव पर लगाया और अब उस पर मेरा अधिकार है। आप अपने वचन से पीछे नहीं हट सकते प्रभु!''

राजा ने महसूस किया कि वह शतरंज के मैदान के बाहर भी घेरा जा चुका है । ''ठीक है । मेरी बहन माँ से मिलने के लिए कल आ रही है । वह अपने मन से तुम्हारे साथ शायद न जाये, लेकिन उसे ले जाने के लिए मैं तुम्हें मौका दूँगा और मैं तुमसे कुछ नहीं कहूँगा । बाकी सब तुम्हारी क्षमता पर है।''.

बहन के आ जाने के एक दिन पश्चात विनयराज ने उसे अपने साथ नदी किनारे घूमने के लिए चलने को कहा । मार्ग में एक सरोबर दिखाई पड़ा जिसमें ढेर सारे कमल के फूल खिले

हुए थे। चाँदनी रात थी। "क्या सुन्दर दृश्य है?" राजा ने उद्गार प्रकट किया।

अचानक राजकुमारी के मन में एक विचार आया, "मैं तुम्हारे लिए कमल के कुछ फूल तोड़ कर लाती हूँ, विनय!" तब वह सरोवर के किनारे गई और फूल तोड़ने के लिए झुकी। तभी वह पाँव फिसल जाने के कारण सरोवर में गिर पड़ी। जैसा कि विदूषक के साथ राजा का वादा था, वह वहाँ से खिसक गया।

राजकुमारी वनिता ने चारों ओर नजर दौड़ाई। जब उसने अपने भाई को वहाँ नहीं देखा तो उसने सोचा कि वह टहलते हुए आगे बढ़ गया होगा और उसे सरोवर में गिरते हुए नहीं देखा होगा। "कोई है जो मेरी सहायता करे!" उसने पुकारा, "मदद करो, कृपया मदद करो।"

विदूषक उसकी मदद के लिए पुकार की प्रतीक्षा कर रहा था। वह तुरन्त घोड़े से उतर कर सरोवर के किनारे जल्दी से पहुँचा और मदद करने के लिए उसने अपना हाथ बढ़ाया।

राजकुमारी उसका हाथ पकड़ कर किसी तरह बाहर आ गई। "युवती, तूने मेरा हाथ पकड़ा है, इसलिए अब तुम्हें इसे छोड़ने नहीं दूँगा। तुम्हें मेरे साथ चलना होगा, मेरे साथ विवाह करना होगा और पत्नी के समान मेरे साथ रहना होगा।"

वनिता भयभीत हो गई। "मैं राजकुमारी वनिता हूँ। मुझे बचाने के लिए मैं आप की कृतज्ञ हूँ, महानुभाव, लेकिन मैं पहले से ही विवाहित हूँ।"

"यह सब बाद में बात हो जायेगी," विदूषक ने कहा, "अभी मैं तुम्हें यहाँ अकेली नहीं छोड़ सकता, इसलिए मैं तुम्हें अपने घर ले चलूँगा। आओ, घोड़े पर बैठ जाओ।"

कोई और उपाय न देख कर राजकुमारी विदूषक के घोड़े पर उसके पीछे बैठ गई। जब विदूषक अपने घर के सामने रुका तब राजकुमारी ने अपने सामने नगर के एकान्त कोने में एक मामूली सा मकान देखा। जब वे घर के अन्दर

चले गये तब विदूषक ने राजकुमारी को बताया कि वह कौन है और किस प्रकार उसने उसे शतरंज के खेल में जीता है । राजकुमारी ने महसूस किया कि राजा ने बिना उसकी मर्जी के उसे दाँव पर लगा दिया परन्तु अब उसे राजा की मर्यादा की रक्षा करनी चाहिये । ''ठीक है, मैं यहीं रहूँगी, लेकिन हमलोगों का विवाह अगली पूर्णिमा को होगा।''

राजकुमारी ने कोई संकेत नहीं दिया कि वह वहाँ से भाग जाने की योजना बना रही है । पूर्णिमा के दो या तीन दिन पहले उस विदूषक के घर से उसे बच निकलने का मौका मिल गया । राजा के महल में जाने के बदले वह अपने पति के घर चली गई, जो सौभाग्य से उसकी दुर्घटना के बारे में नहीं जानता था ।

माधव को जब यह पता चला तो वह तुरन्त राजा के पास गया । राजा ने कहा कि वह अपने पति के घर गई होगी और राजा स्वयं उसे नहीं बुला पायेगा । अतः माधव को ही जाकर उसे अपने साथ आने के लिए तैयार करना चाहिये ।

विदूषक राजकुमारी के पति के घर गया । राजकुमारी का पति राजा और विदूषक दोनों पर क्रोधित था, क्योंकि राजा ने राजकुमारी को दावँ पर लगा दिया था और विदूषक विवाहित राजकुमारी के साथ विवाह करने का हठ कर रहा था । उसने माधव को कहा कि जिस प्रकार उसने राजकुमारी को शतरंज के खेल में जीता है, उसी प्रकार वह उसके साथ युद्ध कर फिर से उसे जीते । विदूषक कुछ अनिच्छा के बाद सहमत हो गया ।

दूसरे दिन दोनों द्वन्द्व युद्ध के लिए तैयार हो गये । युद्ध अधिक देर तक नहीं चला क्योंकि राजकुमारी का पति सन्तुलन खो देने के कारण गिर पड़ा और उसकी तलवार टूट गई तथा तलवार का एक सिरा उसके हृदय में चुभ जाने के कारण उसकी तत्काल मृत्यु हो गई ।

शोक में डूब जाता । वह उसे बहुत चाहने लगा था । अब वह उसका बहुत सम्मान करने लगा । उसने अपने पति के प्रति वफादारी प्रमाणित कर दी थी ।

विदूषक इसलिए भी और दुखी था कि उसी के कारण राजकुमारी के पति को अपने प्राण गंवाने पड़े, यद्यपि वह इसके लिए जिम्मेदार नहीं था, क्योंकि वह दुर्घटनावश मारा गया ।

लेकिन विदूषक को उसने राजकुमारी को प्राप्त करने का एक निष्पक्ष मौका दिया था, इसलिए उसकी मृत्यु पर उसे बहुत दुख हुआ ।

विदूषक तुरन्त राजकुमारी को कहना नहीं चाहता था कि अब उसके साथ विवाह करने में उसे आपत्ति नहीं होनी चाहिये, क्योंकि पति की मृत्यु से वह शोक-विह्वल थी ।

उसने दाह संस्कार तक प्रतीक्षा करने का निश्चय किया । प्रथा के अनुसार दाह - संस्कार के समय राजकुमारी ने चिता के चारों ओर सात बार परिक्रमा की और चिता में अग्नि प्रज्वलित की ।

जब चिता धू-धू कर जलने लगी तब वह एक प्रतिव्रता स्त्री के समान जलती चिता में कूद पड़ी । चिता की लपटों ने उसे आत्मसात कर लिया । माधव के दुख की सीमा न रही । वह राज्य छोड़ कर चला गया और इधर-उधर भटकने लगा ।

जब भी उसे वनिता की याद आती, वह

कुछ दिनों तक भटकने के बाद एक गाँव में उसे एक फ़कीर मिला । विदूषक ने उसके ज्ञान से शान्ति प्राप्त करने की कोशिश की । ज्ञान-चर्चा के दौरान फ़कीर ने उसे कुछ मृत व्यक्तियों के पुनः जीवित हो जाने के बारे में बताया । इससे विदूषक को राजकुमारी और उसके पति को फिर से जीवित कर देने की आशा दिखाई पड़ने लगी ।

उसने फकीर से कुछ गहरे सवाल पूछे तो फकीर ने सिर्फ इतना कहा कि पहाड़ी के नीचे एक गुमनाम गाँव में कुछ लोगों के पास अलौकिक सिद्धियाँ हैं । तुम उनकी सेवा करके उनका अनुग्रह प्राप्त करो । तब शायद वे पुनर्जीवित करने का मंत्र तुम्हें बता सकें ।

माधव कई दिनों तक पैदल चल कर एक

पहाड़ी गाँव में पहुँचा । उसने देखा कि वहाँ के लोग चिड़ियों को मार कर और उनका मांस पका कर खा जाते हैं तथा उनके पंखों और चमड़ों को इकट्ठा कर मंत्र से उन्हें जीवित कर देते हैं । वे चिड़ियाँ पुनः आकाश में उड़ जाती हैं । विदूषक जान गया कि वह फ़कीर द्वारा बताये गये सही गाँव में पहुँच गया है ।

वह उस गाँव में ठहर गया और वहाँ के निवासियों के साथ घुल-मिल कर उनकी गतिविधियों में भाग लेने लगा । लोगों में वह लोकप्रिय हो गया । एक दिन फिर उसने जब वही दृश्य देखा तो वह उन सबसे साहस करके पूछ बैठा कि यह कैसे सम्भव होता है !

कुछ लोग उसे एक वृद्धा के पास ले गये । विदूषक की ओर से गाँव वालों के अनुरोध पर वह वृद्धा विदूषक को मंत्र सिखाने पर राजी हो गई । वह विदूषक को अपनी झोंपड़ी के अन्धेरे कमरे में ले गई और मंत्र का उच्चारण छः बार करवाया ।

माधव ने एक क्षण भी विलम्ब नहीं किया । वह राजधानी में जाकर उस स्थान पर पहुँचा जहाँ राजकुमारी ने अपने प्राण त्यागे थे । उसने भस्म पर जल छिड़क कर तीन बार मंत्र का उच्चारण किया ।

जब उसने आँखें खोलीं, तो देखा कि वनिता राखों के ढेर से उठ रही है ।

उसने मंत्र को फिर से तीन बार पढ़ा और राजकुमारी के पति को जीवित होते देखा । विदूषक बहुत प्रसन्न था । राजकुमारी का पति पहले बोला, "माधव, तुमने द्वन्द्व युद्ध में मुझे परास्त कर दिया, इसलिए वनिता पर तुम्हारा अधिकार है।" वनिता शान्त बनी रही और विदूषक यह निश्चय नहीं कर सका कि वह प्रस्ताव स्वीकार करे या न करे ।

तभी उधर से फकीर गुजर रहा था । उसने विदूषक को धर्मसंकट में देखा और कहा, "याद रखो माधव कि तुमने राजकुमारी को जीवन दिया है । अतः तुम उसके पिता के समान हो । तुम एक पिता का कर्तव्य-पालन करो ।"

माधव ने वनिता के हाथ को उसके पति के हाथ में रख दिया और बिना कुछ बोले उस स्थान को छोड़ दिया । उसके बाद किसी ने उसे राज्य भर में कभी नहीं देखा ।
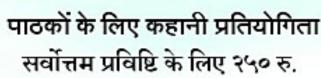
**निम्नलिखित कहानी को पढ़ोः**

रामतीर्थ रायादुर्ग का एक धनी ब्यापारी था । उसके पास अनेक नौकर-चाकर थे । नारायण का काम था कमरों की धूल झाड़ना और हर वस्तु को साफ और सजा कर रखना ।

एक दिन उसने फर्श पर से एक सिक्का उठाया और अपने मालिक को दे दिया । "मैं तुम्हारी ईमानदारी की प्रशंसा करता हूँ, तुम इनाम बतौर यह सिक्का अपने पास रख सकते हो ।" रामतीर्थ ने कहा ।

कुछ दिनों के बाद घर से हीरे का हार लापता था । रामतीर्थ ने हरेक नौकर से पूछा परन्तु किसी ने न देखा, न लिया था ।

नारायण से सबसे अन्त में पूछा गया ।

**तुम्हारी सोच के अनुसार नारायण ने अपने मालिक को क्या उत्तर दिया होगा?**

- नारायण ने हार देखा है या नहीं देखा है ।
- यदि उसने देखा था, तो उसने उसका क्या किया?
- रामतीर्थ की, नारायण के स्पष्टीकरण के प्रति क्या प्रतिक्रिया रही होगी?
- क्या रामतीर्थ ने अपने नौकर को इनाम देकर ठीक किया था?

अपनी प्रतिक्रिया १००-१५० शब्दों में लिखो और लिफाफे में बन्द कर जिस पर "कहानी प्रतियोगिता" लिखा हो, भेज दो । नीचे लिखा हुआ कूपन भी भर कर साथ में संलग्न कर दो ।

## अन्तिम तिथिः २९ फरवरी २००४

नाम-------------------------------------उम्र------------जन्मतिथि----------------------

विद्यालय---------------------------------------------------------------------कक्षा-----------

घर का पता----------------------------------------------------------------------------------

--------------------------------------------------------------------------------------------

--------------------------------------------------------------------पिनकोड----------------------

अभिभावक के हस्ताक्षर　　　　　　　　　　प्रतियोगी के हस्ताक्षर

## चन्दामामा इंडिया लिमिटेड

८२, डिफेंस ऑफिर्स कालोनी, इक्कातुथंगल, चेन्नई - ६०० ०९७.

# सफल यात्रा

ब्रह्मदत्त जब काशी राज्य का शासन भार संभाल रहा था तब बोधिसत्व का जन्म एक व्यापारी परिवार में हुआ। उसने बचपन से ही व्यापार के कौशलों को बड़ों से सीखा। वह हर विषय के सभी कोणों पर खूब सोचता था और उसके बाद ही निर्णय लेता था। वह इस प्रकार अपना ज्ञान व विवेक हमेशा बढ़ाता रहता था। जब वह बड़ा हुआ तब पाँच सौ बैल-गाड़ियों में माल लादकर पूरब से पश्चिम और पश्चिम से पूरब अक़्सर जाया करता था और व्यापार किया करता था। इस व्यापार में वह खूब कमाता था।

काशीनगर में ही, मंदमति नामक एक और व्यापारी रहा करता था। वह निरा बुद्धू था। उपायहीन भी। एक बार जब बोधिसत्व गाड़ियों में माल लादकर यात्रा के लिए सन्नद्ध हो रहा था तब मंदमति ने भी उसके साथ-साथ जाने की इच्छा प्रकट की।

बोधिसत्व ने, मंदमति से कहा, ''हम दोनों की गाड़ियाँ एक साथ निकल पड़ेंगी तो मार्ग कम पड़ जायेगा और यात्रा करना मुश्किल हो जायेगा। इसलिए अच्छा यही होगा कि हम एक-दूसरे के पीछे-पीछे जाएँ। तुम ही निर्णय कर लो कि आगे-आगे तुम जाओगे या मैं जाऊँ। जैसा चाहते हो, निर्णय कर लो।''

मंदमति ने अपने आप यों सोचा, ''मैं आगे जाऊँ तो इससे कई लाभ होंगे। मार्ग सख्त होगा। ज़मीन में नमी नहीं होगी, यात्रा में कोई रुकावट नहीं होगी, बैल हरी घास खा पायेंगे व खाने के लिए आदमियों को ताज़ा फल भी मिलेंगे। पीने को स्वच्छ पानी मिलेगा। जहाँ जाऊँगा, वहाँ माल का मूल्य भी निर्धारित कर पाऊँगा और बेच पाऊँगा।''

बोधिसत्व भी इसी विषय को लेकर सोचने लगा, ''आगे-आगे जाने से अच्छा यही होगा कि पीछे-पीछे ही जाऊँ। सख्त ज़मीन भी नरम पड़ जायेगी। आगे जानेवालों को यह जानने में
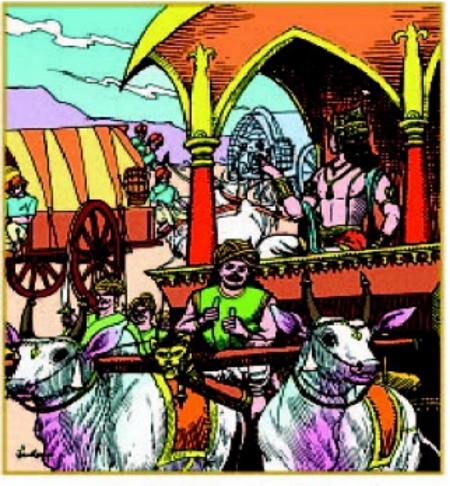
कठिनाई होगी कि पानी कहाँ मिलता है। अगर पानी नहीं मिला तो उन्हें कुआँ खोदना पड़ेगा। ये कुएँ पीछे आनेवाले लोगों के उपयोग में भी आयेंगे। जब नयी जगह पर जायें तब मूल्य को लेकर सौदा करना भी उचित नहीं होगा। पहले जो जाते हैं, उनसे निर्धारित किये गये मूल्यों पर माल को बेचना आसान होगा और इससे कोई समस्या भी पैदा नहीं होगी। बैलों को चरने के लिए हरी घास भी मिलेगी।''

जब मंदमति ने कहा कि पहले मैं ही निकलूँगा तो उसने वही स्वीकार कर लिया। उधर मंदमति को भी इस बात की खुशी थी कि उसकी बात मान ली गयी और सभी सुविधाओं को भोगने का सुअवसर उसे ही मिलेगा। वह अपनी होशियारी पर बेहद खुश होने लगा।

मंदमति का गम्यस्थल साठ कोसों की दूरी पर था। बीच में बहुत बड़ा रेगिस्तान पड़ता था। उसे पार करने पर ही गम्यस्थल पहुँचा जा सकता था।

इसलिए यात्रा के लिए आवश्यक खाद्य सामग्री और पानी का इंतज़ाम भी उसने कर लिया और बोधिसत्व को धोखा दे देने की खुशी में मंदमति अपने साथियों के साथ यात्रा पर निकल पड़ा।

मंदमति का कारवाँ बहुत दिनों तक यात्रा करता रहा और आख़िर में रेगिस्तान में प्रवेश करने लगा। थोड़ी दूर जाने के बाद उसने एक अद्‌भुत गाड़ी देखी।

उस गाड़ी में उत्तम नस्ल के श्वेत रंग के बैल जुते हुए थे। उस गाड़ी के सामने सैनिक तलवारें, धनुष-बाण तथा गदे लिये खड़े थे। गाड़ी में एक राज पुरुष बड़े ही ठाट से आसीन था। गाड़ी के पहियों में कीचड़ लगी हुई थी। सबके हाथों में कमल पुष्प थे।

राजपुरुष ने, मंदमति से कहा, ''जानते हो, कितनी भारी बर्षा हुई! जहाँ देखो, पानी ही पानी है। जंगल का वह पूरा भाग जलमय हो गया। सबके सब गाँव पानी में डूब गये। शायद तुम लोग उसी तरफ़ जा रहे हो। फिर इन पीपों में पानी कैसा? यह बोझ बेकार क्यों ढोये जा रहे हो? पानी फेंक दो और आराम से जाओ।''

गाड़ी में आसीन वह पुरुष और उसके साथ जो लोग थे, वे सबसे सब नरभक्षक यक्ष थे। वे रेगिस्तान में यात्रा करनेवाले यात्रियों को इसी

प्रकार की सलाह देते रहते थे, अपनी मीठी-मीठी बातों से उन्हें फुसलाते थे और जब वे यात्री प्यास के मारे मरने लगते थे, तो उन्हें खा जाते थे।

बेचारा मंदमति इस षड़यंत्र की तह को जान नहीं पाया और उसने उसकी बातों को सच मानकर पीपों को खाली करवा दिया और आगे बढ़ा। राजपुरुष का बताया जंगल तो दीख रहा था, पर बहुत दूर तक जाने के बाद भी कारवाँ वहाँ पहुँच नहीं पाया। वर्षा हुई, इसका भी कोई निशान नहीं था।

सबके सब प्यास के मारे मरे जा रहे थे। पीने के लिए पानी का एक क़तरा भी नहीं था। उनके गले सूख गये और एक-एक करके मरने लगे। क्रमशः बैल भी कमज़ोर होते गये। जो पशु और आदमी मर गये, उन्हें यक्षों ने खा लिया और अस्थिपंजरों को रेगिस्तान की रेत में फेंक दिया।

चालीस दिनों के बाद बोधिसत्व भी अपने कारवाँ के साथ उसी मार्ग से गुज़रा। वह भी अपने साथ इस लंबी यात्रा के लिए आवश्यक खाद्य सामग्री और पानी ले आया था।

जैसे ही वे रेगिस्तान में पहुँचे, बोधिसत्व ने अपने आदमियों से कहा, ''मेरी अनुमति लिये बिना पानी का एक क़तरा भी व्यर्थ मत करना। ऐसे रेगिस्तान में तरह-तरह के विष वृक्ष होते हैं। मेरे कहे बिना कोई भी कोई नया फल या पत्ता न खाये।''

रेगिस्तान में थोड़ी दूर और जाने के बाद गाड़ी में आसीन वह राजपुरुष फिर प्रकट हुआ और मंदमति से जो बातें कही, दुहरायी थीं, वे ही बातें

बोधिसत्व से भी बता दीं। तब बोधिसत्व ने उससे कहा, ''आपको यह कहने की कोई ज़रूरत नहीं। हम व्यापारी हैं। हमें मालूम है कि हमें क्या करना चाहिये। हमें किसी की सलाह की आवश्यकता नहीं है। जब तक हमें किसी और जगह पर पानी दिखायी नहीं पड़ता तब तक हम पानी नहीं फेंकेंगे। पानी जब दिखायी देगा तब भार उतारने पर सोचेंगे।''

यक्ष बिना कुछ कहे वहाँ से खिसक गया।

कुछ लोगों ने यक्ष की बातों का विश्वास किया और वे पीपों से पानी उंडेलने के पक्ष में थे। तब बोधिसत्व ने उनसे कहा, ''क्या आपने कभी सुना कि इस प्रदेश में कोई जलाशय है? वह आदमी तो कह रहा था कि यहाँ मूसलधार वर्षा हुई है। पर क्या हमने ठंडी हवा के झोंकों का अनुभव किया? आकाश में क्या बादल दिखायी पड़े? बिजली कड़कती हुई सुनायी पड़ी? जिन लोगों को हमने देखा, वे यक्ष हैं। हम प्यास के मारे मर जाएँ तो हमें खाने के लिए उन्होंने यह चाल चली थी। जो व्यापारी व लोग पहले गये, उन्हें वे खा चुके होंगे। उनके अस्थिपंजर भी शायद हमें रास्ते में दिखायी देंगे।''

उसके कहे अनुसार ही, थोड़ी दूर और जाने के बाद उन्हें बैल-गाड़ियाँ और उनके माल दिखायी पड़े। उनके चारों ओर मनुष्यों और बैलों के अस्थिपंजर बिखरे पड़े थे। वह दृश्य बड़ा ही भयानक लग रहा था।

''देखा, मंदमति कितना बेवकूफ़ निकला। किसी पराये की बातों का विश्वास करके उसने पानी फेंक दिया, जिसका यह नतीजा हुआ।'' बोधिसत्व ने अपने आदमियों को समझाया।

बोधिसत्व और उसके आदमी उस रात को वहीं ठहर गये। दूसरे दिन सबेरे निकलने के पहले उस सारे माल को जो ख़राब नहीं हुआ था, बटोर लिया फिर वे अपने गम्यस्थल पर पहुँचे, खूब व्यापार किया और लाभ कमाकर सकुशल अपना देश लौट आये। इस यात्रा में उसके एक भी प्राणी को नुक़सान नहीं पहुँचा। यह सब बोधिसत्व को व्यापार-कौशल तथा उनकी दूरदर्शिता के कारण सम्भव हो सका।

# विष्णु पुराण

सत्यव्रत की बातें सुनकर मछली समुद्र के बीच पहुँची, एक महा पर्वत की भांति समुद्र की लंबाई तक फैलकर बोली, "सत्यव्रत, देखा, तुम्हारी वाणी अचूक निकली और अचूक रहेगी। न मालूम मैं यों बढ़ते-बढ़ते क्या से क्या हो जाऊँगी?"

सत्यव्रत ने हाथ जोड़कर प्रणाम किया, और उसकी स्तुति करने लगा, "मत्स्यावतार वाले हे नारायण ! आप रक्षा की माँग करने आये और मेरी रक्षा करने के लिए आपने मत्स्यावतार लिया। आप मत्स्य के रूप में अवतरित लीलामानुष स्वरूप हैं ! आपकी लीलाओं को समझने की ताक़त मेरे अन्दर कहाँ है?"

इसके जवाब में मत्स्यावतार में रहनेवाले विष्णु ने कहा, "हे राजन्, सात दिनों के अंदर कल्पांत होनेवाला है। प्रलयकाल के जल में सारी दुनिया डूब जाएगी। लेकिन ज्ञान, औषधियों और बीजों का नाश नहीं होना चाहिए। तुम्हारे वास्ते एक बड़ी नाव गहरे अंधेरे में चिराग की तरह जलती आएगी। उसके अन्दर सप्त ऋषि होंगे ! वह रोशनी उन्हीं लोगों की है !

"तुम अपने साथ औषधियों और बीजों के ढेर को नाव में पहुँचा दो। मेरे सिर पर जो सींग हैं, उस पर नाव को कस कर थामे रहूँगा और उसके डूबने से मैं बचाऊँगा। इसी के वास्ते मैंने इस रूप में अवतार लिया है। इस वक़्त ब्रह्मा निद्रा में निमग्न हैं, उनके जागने तक यह नाव ध्रुव नक्षत्र को दिशा सूचक बनाकर यात्रा करेगी। अगले कल्प में तुम वैवस्वत के नाम से मनु बनोगे।" सत्यव्रत ने विष्णु की आज्ञा को शिरोधार्य कर नत मस्तक हो उन्हें प्रणाम किया।

मत्स्यावतार अपने चार पंखों को फड़-फड़ाते, ऊँची लहरों को चीरते समुद्र के अन्दर चला गया।

ब्रह्मा गहरी नींद सो रहे थे। अंधकार में प्रलय तांडव हो रहा था।

हयग्रीव नामक सोमकासुर समुद्र तल से ऊपर आया, फिर अचानक चमगीदड़ की तरह ब्रह्मा के सत्य लोक में उड़कर चला गया।

ब्रह्मा जब नींद के मारे पहले जंभाइयाँ ले रहे थे, तब उनके चारों मुखों से सफ़ेद, लाल, पीले और नीले रंगों में चमकनेवाले चार वेद बाहर निकले और नीचे गिर गये। हयग्रीव ने उन वेदों को उठा ले जाकर समुद्र के अन्दर छिपा दिया।

हयग्रीव देवताओं और विष्णु का भी ज़बर्दस्त दुश्मन था। वेदों के बिना ब्रह्मा सृष्टि की रचना नहीं कर सकते थे। हर एक कल्प में विष्णु अच्छाई को बढ़ावा देकर उसका विकास करना चाहते थे। उनके इस संकल्प को बिगाड़ देना ही हयग्रीव का लक्ष्य था।

प्रलय कालीन समुद्र पृथ्वी को डुबो रहा था। उस वक़्त सत्यव्रत को उस गहरे अंधेरे में दूरी पर नक्षत्र की तरह टिमटिमाने वाली रोशनी में एक नाव दिखाई दी। वही सप्त ऋषियों की कांति से भरी नाव थी।

सत्यव्रत ने औषधियों तथा बीजों को  नाव के अंदर पहुँचा दिया और  नारायण की स्तुति करते उसी नाव में यात्रा करने लगा। मत्स्यावतार की नाक पर एक लंबा सींग था। नक्षत्र की तरह चमकने वाले उस सींग से लिपट कर एक महा सर्प प्रलयकालीन आंधी को निगल रहा था। मत्स्यावतार अपने पंखों से लहरों को रोकते समुद्र को चीरते नाव को सुरक्षित ले जा रहा था। ध्रुव नक्षत्र को मार्गदर्शक बनाकर वह नाव फूल की तरह तिरते आगे बढ़ रही थी।

समुद्र के गर्भ में छिपाये गये वेदों का पहरा देते सोमकासुर समुद्र के भीतर टहल रहा था। चारों वेद चार शिशुओं के रूप में बदलकर किलकारियाँ कर रहे थे।

मत्स्यावतार वेदों की खोज करते हुए आगे चल पड़ा। मत्स्यावतार को देखते ही सोमकासुर घबरा गया; फिर भी हिम्मत बटोर कर वह अपना कांटोंवाला गदा हाथ में ले जूझ पड़ा।

उस समय तक विष्णु का अवतार मत्स्य के रूप में कमर तक हो गया था। उसमें चारों हाथ निकल आये थे। देखते-देखते मत्स्यावतार और

सोमकासुर के बीच भीषण लड़ाई छिड़ गई।

सोमकासुर समुद्र तल में पहुँचकर भागने लगा, इस पर विष्णु ने अपने चक्र से उसे टुकड़े-टुकड़े कर दिया।

विष्णु शिशुओं के रूप में स्थित बेदों को अपनी बगग में दबाकर पानी के ऊपर आ गये। बे चारों शिशु बिष्णु के कंठहार में शोभा देनेबाले श्रीवत्स तथा कौस्तुभ मणियों के साथ नन्हें हाथों से खेलते हुए क़िलकारियाँ मार रहे थे। चारों बच्चे सफ़ेद, लाल, पीले व नीले रंग की कांतियों से चमक रहे थे। विष्णु के हाथों में शंख और चक्र शोभायमान थे।

विष्णु के मत्स्यावतार को देख ऋषि और सत्यव्रत तन्मय हो हाथ उठाकर उनकी स्तुति करने लगे। प्रलय तांडव शांत हो गया था, जहाँ-तहाँ भूमि दिखाई देने लगी थी। नाव भी अपने लक्ष्य पर पहुँच गई।

ब्रह्मा के लिए दिन और रात का समय बराबर था। उनकी निद्रा का समय पूरा होने को था। आसमान में प्रकाश की किरणें फूट रही थीं। नया कल्प शुरू हो रहा था। सरस्वती देवी पहले जाग उठीं। उन्होंने अपनी बीणा पर भूपाल राग का आलाप किया।

ब्रह्मा जाग उठे। उन्हें लगा कि उनके चारों सिरों में कोई अशांति फैली है। फिर परख कर देखा, वेद गायब थे। इसी चिंता में ब्रह्मा कुछ परेशान थे, तभी बिष्णु ने मत्स्याबतार में प्रत्यक्ष हो उनके हाथ में बेद सौंप दिये।

ब्रह्मा ने विष्णु के मत्स्यावतार को जी भरकर देखा, तब अपने हाथ जोड़कर चारों मुखों से उनकी स्तुति की :

"हे नारायण! जो व्यक्ति आपके मत्स्यावतार का ध्यान करता है, उसकी सारी बिपदाएँ इस तरह हट जायेंगी जैसे प्रलय के रूप में उपस्थित सारी विपदाएँ दूर हो जाती हैं और उनका अज्ञान रूपी अंधकार हट जायेगा।"

विष्णु के द्वारा मत्स्यावतार लेने का कार्य सफल हो गया था, इसलिए बे अंतर्धान होकर अपने निवास बैकुंठ में पहुँचे।

ब्रह्मा ने बेद लेकर सृष्टि की रचना शुरू की। सत्यव्रत श्राद्धदेव वैवस्वत के नाम से मनु हुए।

सप्त ऋषि आसमान में अपने-अपने स्थानों में पहुँचकर सप्तर्षि मण्डल के रूप में प्रकाशित होते हुए, ध्रुव की प्रदक्षिणा करते घूमने लगे। यों
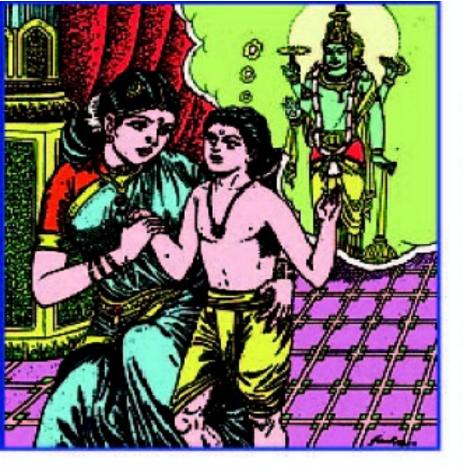
सूत महर्षि ने कहानी सुनाई। इस पर मुनियों ने पूछा, ''सूत महर्षि, हम लोग ध्रुव की कहानी सुनना चाहते हैं!''

सूत मुनि यों सुनाने लगे : इस विशाल विश्व में सबसे ज़्यादा ऊँचा स्थान ही ध्रुव मण्डल है। वही विश्व स्वरूप विष्णु के शिर का स्थान है।

ऐसा ऊँचा स्थान पानेवाले ध्रुव उत्तानपाद नामक एक राजा के पुत्र थे। ध्रुव की माता सुनीति राजा उत्तानपाद की ज्येष्ट पत्नी थी, सुरुचि छोटी रानी थी। राजा सुरुचि को ज़्यादा प्यार करते थे।

एक दिन राजा उत्तानपाद छोटी रानी सुरुचि के पुत्र उत्तम को अपनी जांघ पर बिठाकर प्यार जता रहे थे। तभी वहाँ पर ध्रुव आ पहुँचा! उसके मन में भी अपने पिता की जाँघ पर बैठने की इच्छा थी। वह बड़ी लालसा से अपने पिता की आँखों में देखता रहा। उस वक़्त सुरुचि वहीं पर थी। राजा सुरुचि से डर कर ध्रुव को देखकर भी अनदेखा सा कर गये। ध्रुव ने सोचा था कि उसके पिता उसको भी अपने छोटे भाई के जैसे अपनी जाँघ पर बिठायेंगे। पर ऐसा न होते देख उसे रोना आया। उसके गालों पर आँसू मोती जैसे चमक उठे।

ध्रुव की हालत देख सुरुचि खिल-खिला कर हँस पड़ी और बोली, ''अरे, बदक़िस्मत के बच्चे! चाहे तुम ज़िंदगी भर तपस्या क्यों न करो, मेरे पुत्र के समान तुम्हें अपने पिता की जांघ पर बैठने का भाग्य प्राप्त न होगा। मेरे पेट में पैदा होगे तभी तुम्हें यह सौभाग्य प्राप्त होगा। हाँ, तुम तो जब देखो, नारायण का संकीर्तन किया करते हो! अब तपस्या करके उसी नारायण से पूछकर देखो, कहीं वे तुम को ऐसा सौभाग्य प्रदान कर सकते हैं या नहीं?'' यों सुनीति ने ध्रुव का मज़ाक उड़ाया।

बालक ध्रुव का मन कचोट उठा। उसका दुख उमड़ पड़ा। उसका क्रोध खौल उठा। उसके मन में सुरुचि की हत्या करने की इच्छा जगी, लेकिन दूसरे ही क्षण उसे सुरुचि एक उत्तम उपदेशिका सी लगी, मानो उसे यह सलाह देती हो, ''बेटा, नारायण पर विश्वास करो। तपस्या करो।'' तब ध्रुव को लगा कि उत्तम कुमार ऐसे महान उपदेश पाने का सौभाग्य न रखनेवाला एक आभागा है? राजा उत्तानपाद उसे अंधेरे रूपी जाल में फंसकर छटपटाने वाले हिरण जैसे लगे। इसके बाद ध्रुव ने सुरुचि को इस प्रकार प्रणाम

किया, जैसे गुरु का उपदेश पाने के बाद शिष्य गुरु को प्रणाम करता है।

तब वहाँ से चल पड़ा। ध्रुव के इस व्यवहार पर चकित हो सुरुचि अपने मन में सोचने लगी, ''लड़का तो भला मालूम होता है ! गालियाँ देने के बाद भी प्रणाम करके चला गया। प्रणाम न करे तो करेगा ही क्या? मेरे सामने मुँह खोलने की उसकी हिम्मत है? या उसकी माँ हिम्मत कर सकती है?''

आँसू बहाते लौट आये ध्रुव को देख, दासियों के द्वारा सारी हालत जानकर सुनीति रो पड़ी, तब बोली, ''हाँ, बेटा, बात सच है। दासी जैसी ही निकृष्ट जीवन बितानेवाली मेरे गर्भ से तुम क्यों पैदा हुए? तुम्हारी मौसी की बातें सच हैं ! तुम्हारे लिए और मेरे वास्ते भी उस नारायण को छोड़ कोई दूसरा सहारा नहीं है।''

अपनी माता की बातें सुनने पर ध्रुव के मन को शांति मिली। बोला, ''माँ, मैं तपस्या करने जा रहा हूँ। मुझे कृपया आशीर्वाद दो।''

''क्या बोला? तुम तपस्या करोगे? तब तो नारायण से सुरुचि के गर्भ से पैदा होने का वर, माँग लो।'' सुनीति ने कहा।

''माँ, ऐसी बातें अपने मुँह से न निकालो ! मैं तुम्हारा पुत्र हूँ ! हमें कभी अपने को छोटा मानना नहीं चाहिए ! यह तो आत्महत्या के समान है। मैं यह साबित करना चाहता हूँ कि ध्रुव की माता कैसी भाग्यशालिनी है? दिशा हीनों के लिए दिग्दर्शक बनने का वर मैं नारायण से माँग लूँगा।''
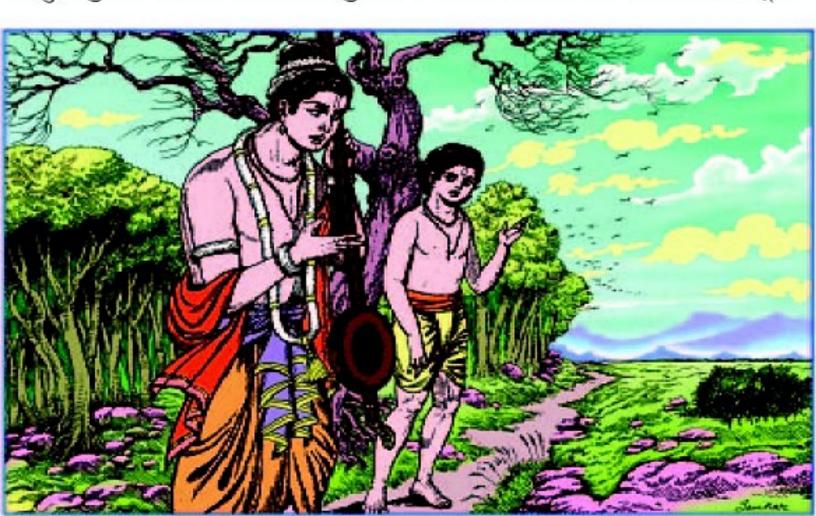
यह कहकर ध्रुव उसी वक़्त घर से चल पड़ा।

रास्ते में नारद मुनि से बालक ध्रुव की मुलाक़ात हुई। नारद ने पूछा, ''हे ध्रुव कुमार ! लगता है कि तुम खेलने के लिए चल पड़े?''

''स्वामी, मैं तपस्या करने जा रहा हूँ!'' ध्रुव ने जवाब दिया।

''ओह, तपस्या नामक कोई खेल भी है? तब तो खूब खेलो, बेटा !'' नारद ने मजाक़ किया।

''मुनिवर, यह कोई खेल नहीं ! सचमुच मैं तपस्या करने के लिए ही जा रहा हूँ। ध्रुव ने स्पष्ट शब्दों में कहा।

''उफ़ ! यह बात है! इस छोटी सी बात को लेकर तुम तपस्या करने जा रहे हो? मेरे साथ चलो, मैं देखूँगा कि तुम्हारे पिता तुमको अपनी जांघ पर क्यों कर नहीं बिठाते?'' नारद ने कहा।

''स्वामी, मैं किसी की दया नहीं चाहता। सबसे उत्तम नारायण का अनुग्रह मुझे चाहिए। इसी वास्ते मैं तपस्या करने के लिए जंगल में जा रहा हूँ।'' ध्रुव ने कहा।

''तपस्या करना कोई हँसी-खेल की बात नहीं, बेटा ! जंगल में शेर, बाघ वग़ैरह खूँख्वार जानवर होते हैं! धूप, जाड़ा और बरसात का सामना करना पड़ता है ! मेरी बात मानकर घर चलो।'' नारद ने समझाया।

''मुनिवर, मैं क्षत्रिय हूँ! अपमान सहते हुए ज़िंदा नहीं रह सकता ! क्या आप मुझे कायरता की दवा पिलाने आये हैं?'' ध्रुव ने पूछा।

''बेटा ध्रुव ! मैंने तुम्हारा दृढ़ निश्चय जानने के लिए ही ये बातें कहीं ! एक जमाने में मैंने भी अनाथ बालक बनकर अनेक अपमान और अत्याचारों का शिकार हो अंत में तपस्या की थी। तुम मधुवन में जाकर 'ॐ नमो नारायण !' का जाप करते तपस्या करो; मैं तुमको आशीर्वाद देता हूँ! अपने कार्य में सफल होकर लौट आओ !'' नारद ने समझाया।

ये बातें सूत मुनि के मुँह से सुनकर मुनियों ने पूछा, ''मुनीन्द्र ! नारद ने अपमान और अत्याचारों का सामना कैसे किया? नारद का वृत्तांत सुनने का कुतूहल हमारे मन में पैदा हो रहा है !''

***(क्रमशः)***

# जब परियाँ बाज़ार करने आई

मिलफोड हेवन वेल्स के रेतीले तट पर बसा हुआ एक छोटा-सा शहर था। वहाँ के लोग बड़े शान्त और सौम्य जीवन व्यतीत कर रहे थे, लेकिन कुछ दिनों के बाद कुछ विचित्र और चमत्कारी घटनाएँ होने लगीं। जैसे बाज़ार से अचानक सामान का गायब होना। और दुकानदारों के सामने, जिनके सामान गायब हो जाते थे, अचानक स्वर्ण मुद्राओं का प्रकट हो जाना।

एक दिन एक दुकानदार, ग्रिफिथ, अपने आखिरी ग्राहक को चला कर अपने ललाट का पसीना पोंछता हुआ आराम की सांस ले रहा था। तभी वह अपनी आँखों के सामने से एक बड़े कद्दू को गायब होते देख कर हक्का-बक्का रह गया। और यह देख कर कि उसके सामने कुछ स्वर्ण मुद्राएँ प्रकट हो गईं, वह
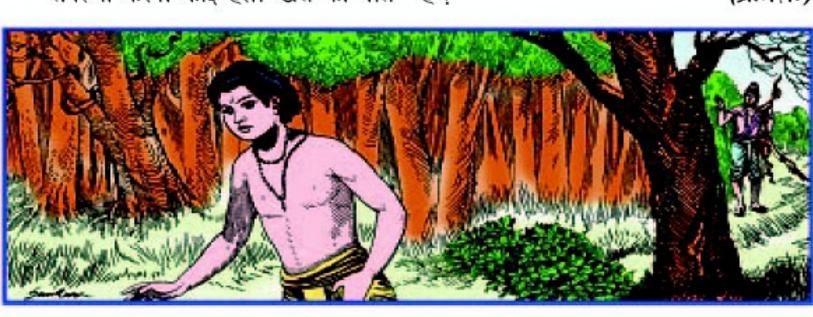
उतना ही हैरान भी रह गया। चकित होकर उसने मुद्राएँ उठा लीं। मुद्राओं के पास सोने की एक छड़ी थी। उसने इधर-उधर देखा, लेकिन उसे भीड़ भरे बाजार में कैसे पता चले कि किसकी छड़ी छूट गई है। उसने उसे उठा लिया और मुद्राओं के साथ उसे जेब में डाल लिया।

लेकिन यह सब क्या है? ये विचित्र प्राणी कौन हैं? ये अभी एक मिनट पहले तो नहीं थे! ग्रिफिथ अपनी आँखों पर विश्वास न कर सका जब उसने देखा कि प्राणवन्त रंग-बिरंगी पोशाकों में फुर्तीली गति से छोटे-छोटे प्राणी इधर-उधर घूम रहे हैं। लगता था वे भी बाजार में खरीदारी कर रहे थे। ग्रिफिथ ने अपनी आँखें मलीं और अपने को चिकोटी काट कर देखा कि वह कहीं सपना तो नहीं देख रहा है!

उसने शीघ्र ही अनुभव किया कि सिर्फ उसने ही उन प्राणियों को देखा है। ''शायद छड़ी के कारण जो मैंने उठा कर रख ली, यह सम्भव हुआ है कि मैं परियों को देख सकता हूँ।'' उसने देखा कि वे छोटे प्राणी दुकानों में भिन्न-भिन्न सब्जियाँ और फल उठा कर रख रहे हैं और उनके बदले वहाँ पर स्वर्ण मुद्राएँ छोड़ कर जा रहे हैं।

अब उसने समझा। ओह ''अच्छा! तो आप ही शहर में चीजों के रहस्यमय ढंग से अदृश्य और प्रकट होने के लिए जिम्मेदार हैं!'' एक अच्छा व्यापारी होने के नाते उसने ऐसी चीजों की सूची बनाई जिन्हें परियाँ पसन्द करती थीं।

दूसरे दिन उसने उन सारी चीजों को लाकर दुकान में रखा और उनकी प्रतीक्षा करने लगा। जब बाजार पूरी सरगर्मी पर था, परियाँ पहुँची। वे सीधे उसी की दुकान पर आईं और मनचाही चीजें उठाने लगीं। जब वे चली गईं तब ग्रिफिथ के निकट स्वर्णमुद्राओं का ढेर लग चुका था। परियों ने उसकी दुकान पर आना जारी रखा और शीघ्र ही वह बहुत धनी व्यक्ति बन गया।

एक दिन जब वह समुद्र तट पर सैर करने निकला तो उसने कुछ दूरी पर एक टापू देखा। परियाँ उड़ती हुई उसी दिशा में जा रही थीं। ''परियाँ वहीं रहती होंगी।'' उसने मन में सोचा। यह छड़ी की मेहरबानी है कि मैं टापू को देख पा रहा हूँ।''

उसने शीघ्र ही परियों के साथ अपना व्यापार बढ़ाने की योजना बना ली, जिससे वह और धनी बन सके। ''मुझे अपने माल के साथ उस टापू पर अवश्य जाना चाहिये। मुझे वहाँ निश्चय ही और अधिक क्रेता मिलेंगे - क्योंकि वे सब

के सब हर रोज यहाँ हमारे बाजार में नहीं आते होंगे। इससे मैं और धनी बन जाऊँगा।''

दूसरे दिन उसने एक नाव पर चुनिन्दे मालों को लादा और उस टापू के लिए चल पड़ा। वहाँ पहुँचने पर किनारे तक वह अपने माल को खींच कर ले गया। कुछ परियों ने उसे देखा और उसे अपने द्वीप पर देख कर वे चकित रह गईं। वे दौड़ कर अपने मित्रों को बताने गईं।

बहुत - सी परियाँ घुसपैठिये को देखने के लिए उमड़ पड़ीं। ग्रिफिथ निस्सन्देह उन सब को देखकर बहुत खुश हुआ। ''आओ, आओ! मेरे मित्र!'' वह चिल्ला कर बोला, ''देखो, मैं आप सब के लिए क्या लाया हूँ! इससे हर रोज मिलफोड हेवन जाने की परेशानी से आप बच जायेंगी!''

तभी परियों का नेता वहाँ पहुँच गया। उसने समय पर पहुँच कर ग्रिफिथ का उसकी साथी-परियों के लिए निमंत्रण सुन लिया था। उसने परियों से कहा, ''डरो नहीं। यह मनुष्य लालची हो गया है और इसका लालच एक दिन इसे गर्त में गिरा देगा। लेकिन उसे यह सन्देह न होने दो कि हमलोग उसके मन की बात जानते हैं। जो भी चीज़ उससे खरीदना चाहते हो, खरीद लो और उसे हर रोज आने के लिए निमंत्रित कर दो। हमलोग धीरे-धीरे इसकी गहराई तक पहुँचेंगे।''

परियों ने समर्थन किया। वे ग्रिफिथ के पास गये। जो उन्हें खरीदना था, खरीद लिया। ''कल भी आना, इसी समय, यहीं पर।'' एक चमकीली आँखोंवाली परी ने कहा जो उसके साहसिक अभियान की सफलता पर रोमांचित थी।
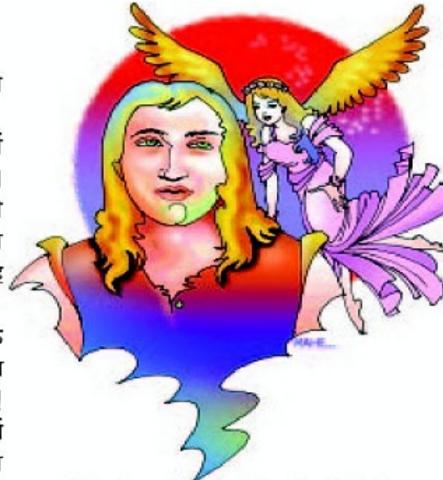
ग्रिफिथ के चले जाने पर नेता ने परियों को बुलाया। ''जब वह आता है तब उससे यह पूछना कि वह हमारे टापू को कैसे देख सका जबकि मानव दृष्टि के लिए यह अगोचर है। क्यों कि यदि अन्य मनुष्यों को भी यह रहस्य मालूम हो जाये और वे यहाँ आने लगें तो हमारी शान्ति चली जायेगी।''

दूसरे दिन जब ग्रिफिथ अपने माल के साथ आया तब परियों ने उसका भावपूर्ण स्वागत किया। उसने अत्यधिक सम्मानित अनुभव किया और उनके जाल में धम्म् से जा गिरा।

''तुम्हारी सब्जियाँ आज बहुत ताजी हैं'', एक सुन्दर छोटी परी ने ग्रिफिथ पर अपनी लम्बी बरौनियों को घुमाते हुए कहा।

''शुक्रिया प्यारे!'' ग्रिफिथ ने कहा।

तब उसने पूछा, ''तुम्हें आखिर हमलोगों के बारे में कैसे पता चला। मैं समझती थी कि

मनुष्य की आँखों के लिए हम अगोचर हैं।"

"ऐसा हुआ कि एक दिन तुममें से किसी ने मेरी दुकान में अपनी छड़ी छोड़ दी; तब से मैं तुम सब को देख पाने में समर्थ हूँ।" उसने कहा ।

"क्या मैं उसे देख सकती हूँ?" कुमारी लम्बी बरौनी ने पूछा ।

वह कैसे कोई चीज उसे मना कर सकता था? उसने तुरन्त अपनी जेब से छड़ी निकाली। परी ने उसे लेकर उलट-पलट कर देखा । "आह ! यह तो डेज़ी का है"! कुछ दिन पहले उसने इसे खो दिया था और फिर उसे कभी न मिला ।" उसने कहा ।

उसने अपनी सखियों को यह बात बताई और उन सबने छड़ी को पुनः पाने के लिए एक योजना बनाई ।

जब ग्रिफिथ दूसरी बार द्वीप पर आया, वह सुन्दर युवा परी उसके पास गई और पूरे द्वीप को दिखाने का प्रस्ताव रखा । द्वीप रत्नों और हीरे जवारातों से भरा था । यहाँ तक कि घर भी रूबी, पन्नों तथा हीरों के बने थे । ग्रिफिथ की आँखें लालच से चमकने लगीं । और उस सारी दौलत को हथियाने का सपना देखने लगा। "तुम जितना धन ले जा सकते हो, ले जाओ," कुमारी लम्बी बरौनी ने नखरे-के अन्दाज में कहा, "लेकिन इसके बदले तुम्हें कुछ देना होगा।"

"क्या?" ग्रिफिथ ने लालचवश हाँफते हुए पूछा ।

"कोई खास बड़ी चीज़ नहीं है", उसने मन्द और स्थिर आवाज में कहा, "केवल वह छोटी -सी छड़ी जो तुमने कल मुझे दिखाई थी।" उसने उत्तर दिया ।

ग्रिफिथ राजी हो गया । तब परी ने उसे एक ऐसा स्थान दिखाया जहाँ सभी रंगों और आकार के रत्नों का ढेर पड़ा था । वह जितना ले जा सकता था, लेकर उसने नाव में लाद लिया । फिर उसने छड़ी उसे दे दी और घर के लिए चल पड़ा ।

बेचारा ग्रिफिथ ! जैसे ही नाव पर सवार हो वह वहाँ से चला कि उसका धन धीरे-धीरे घटने लगा । चकित एवं क्रोधित हो उसने चारों ओर नजर दौड़ाई कि शायद तट पर किसी परी पर उसकी नजर पड़ जाये तो वह पूछे कि ऐसा क्यों हो रहा है । लेकिन अब परियों का द्वीप भी अदृश्य हो गया! ग्रिफिथ ने तब अनुभव किया कि छड़ी के बिना अब वह परियों को नहीं देख पायेगा ।

घर लौटने पर उसने मिलफोड हेवन में फिर कभी परियों को नहीं देखा ।
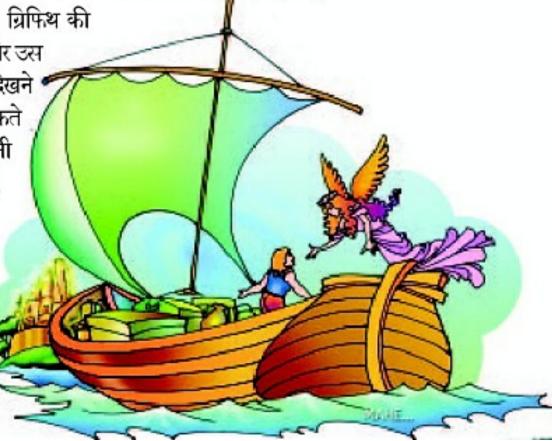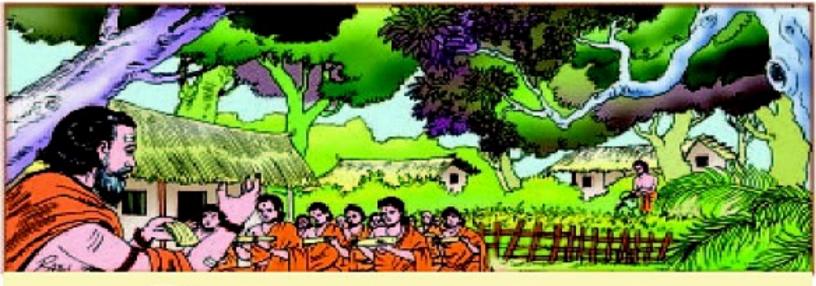
# मुश्किल सवाल-अच्छा जवाब

हर कोई मानता है कि चित्रानंद स्वामी उच्च कोटि के पंडित हैं । गाँवों से बहुत दूर सरोवर के पास एक सुंदर उद्यानवन में उन्होंने विद्यापीठ की स्थापना की और उसे सुव्यवस्थित रूप से चलाते आ रहे हैं ।

पंद्रह साल की उम्र में ही उन्होंने घर छोड़ दिया और विद्या-प्राप्ति के लिए कितने ही प्रांतों में गये और वहाँ के श्रेष्ठ पंडितों से ज्ञान प्राप्त किया ।

जब पचास साल पूरे हुए, नवद्वीप से वे लौट आये और उन्होंने इस विद्यापीठ की स्थापना की। इस सुप्रसिद्ध विद्यापीठ में प्रवेश पाना कोई आसान बात नहीं है ।

जो भी इस विद्यापीठ में पांच सालों तक शिक्षा पाते हैं, उन्हें इतना ज्ञान हो जाता है कि उसे किसी भी आस्थान में आसानी से नौकरी मिल जाती है ।

इस कारण, कितने ही विद्यार्थी सुदूर प्रांतों से यहाँ आते हैं और इस गुरु से शिक्षा पाकर अपने को धन्य समझते हैं ।

यहाँ प्रवेश के लिए आनेवालों की बौद्धिक क्षमता तथा समय-बोध की जाँच करने के उद्देश्य से वे चंद परीक्षाएँ लेते हैं । उनमें जो उत्तीर्ण होते हैं, उन्हीं को विद्यापीठ में प्रवेश प्राप्त होता है ।

एक दिन शाम को, अठारह साल का एक युवक गुरु चित्रानंद स्वामी से मिलने आया । उनके पैरों को छूने के बाद उसने कहा, "गुरुदेव, आपकी विद्यापीठ की प्रसिद्धि सुनकर बहुत दूर से चला आया हूँ । हमारी चिर वांछित आकांक्षा है कि आप की सम्मानित संस्था में, आप जैसे महान गुरु की छत्रच्छाया में, विद्याध्ययन करूँ आपकी विद्यापीठ में शिक्षा पाने का अवसर कृपया मुझे दें ।"

- जितैन आर्य -

चित्रानंद स्वामी ने दो-तीन क्षणों तक उस युवक को ध्यानपूर्वक देखा । उस युवक के मुख से तेजस्विता फूट रही थी । वह सौम्य और विनम्र लग रहा था । उसके व्यक्तित्व से गांभीर्य और जिज्ञासा का भाव टपक रहा था ।

हाथ जोड़कर खड़े उस युवक से उन्होंने कहा, ''विद्यापीठ में प्रवेश पाने के पहले मैं हर एक की परीक्षा लेता हूँ। यह साधारणतया छोटी परीक्षा होती है । मेरे सवालों के सही जवाब दे पाओगे तो समझ लो, तुम्हें विद्यापीठ में स्थान मिल गया।''

''ठीक है, जवाब देने के लिए मैं तैयार हूँ । पूछिये गुरुदेव,'' निधड़क उस युवक ने कहा ।

''तुमसे दस सामान्य सवाल पूछूँ या एक ही मुश्किल सवाल?'' मुस्कुराते हुए गुरुदेव ने पूछा।

''क्षमा कीजिये, गुरुदेव, मैं नहीं चाहता कि दस सवाल पूछकर आप अपना मूल्यवान समय व्यर्थ करें । इसलिए आप एक ही मुश्किल सवाल पूछिये,'' युवक ने कहा ।

''तो बिना हिचकिचाये तुरंत जवाब देना । बीज पहले या पेड़?'' चित्रानंदस्वामी ने पूछा ।

''पेड़ ही गुरुदेव,'' युवक ने कहा ।

आश्चर्य प्रकट करते हुए युवक को ध्यान से देखते हुए उन्होंने पूछा, ''तुमने तो जवाब ऐसा दिया, मानों वह अचूक हो । लेकिन फिर भी कैसे बता सकते हो कि पेड़ ही पहले आया?'' चित्रानंदस्वामी ने फिर से सवाल किया ।

युवक ने कहा, ''क्षमा चाहता हूँ, गुरुदेव । आपने कहा था कि आप मुझसे एक ही सवाल पूछेंगे । पर, आपसे पूछा गया यह सवाल दूसरा है।'' अतः सविनय निवेदन करना चाहता हूँ कि दूसरे सवाल का जवाब देने की कोई ज़रूरत नहीं है।

उसके इस जवाब पर चित्रानंदस्वामी को पहले आश्चर्य अवश्य हुआ पर बाद में मुस्कुराते हुए उस युवक की सूक्ष्म बुद्धि तथा समय -बोध पर बहुत ही खुश हुए ।

उन्होंने उसी दिन विद्यापीठ में उसे प्रवेश दे दिया ।
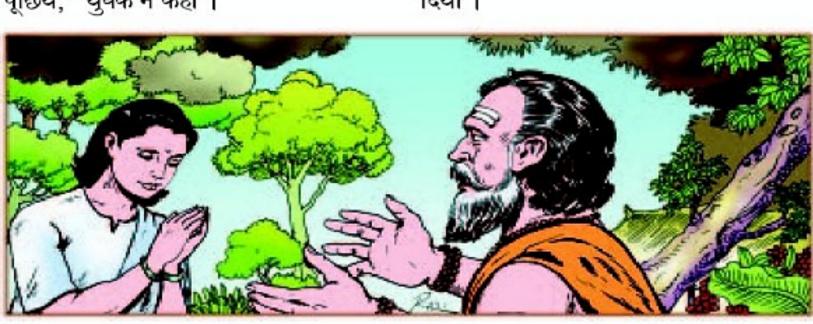
# अमर फल

प्राचीन काल में एक मुनि संसार से विरक्त हो जंगल में जाकर तपस्या कर रहा था। एक दिन देवता ने प्रत्यक्ष होकर मुनि के हाथ में एक फल दिया और कहा, ''मैं तुम्हारी तपस्या पर प्रसन्न हूँ। इस अमर फल को तुम अपने हाथ में लेकर जो भी चाहोगे, वह तुमको तुरंत मिल जायेगा।'' यह कहकर वह अंतर्धान हो गया।

वैसे मुनि की कोई इच्छा न थी। उसने सोचा कि देवता ने उसकी परीक्षा लेने के लिए शायद यह फल दिया है। फल के द्वारा जनता का उपकार करने के ख्याल से वह राजा के पास गया। राजा ने मुनि के आगमन पर खुश होकर उनका उचित आदर-सत्कार किया और आने का कारण पूछा।

''राजन, यह एक अमर फल है। इसका मूल्य देकर जो खरीदेगा, उनकी एक इच्छा की पूर्ति होगी। इसके बाद इसे दूसरों को कम दाम पर बेचना होगा। इच्छा के पूरा होने के बाद किसी को भी इस फल को एक सप्ताह से अधिक अपने पास रखना नहीं चाहिए। रखना बहुत खतरनाक हो सकता है। पहले मैं यह फल आपको देता हूँ। कहिये, आप इसका क्या मूल्य देनेवाले हैं?'' मुनि ने कहा।

राजा के मन में शीघ्र एक इच्छा की पूर्ति करने की कामना थी। उसका पड़ोसी राजा के साथ बहुत समय से युद्ध चल रहा था। काफ़ी धन खर्च होता था। इसलिए इस अमर फल द्वारा पड़ोसी राजा पर विजय पाने की इच्छा से उसने उसे एक लाख मुद्राएँ देकर खरीदने का निश्चय किया।

मुनि ने उस फल को राजा के हाथ में देते हुए कहा, ''तुम्हारी इच्छा की पूर्ति होने के एक सप्ताह के अंदर कम मूल्य पर इसे दूसरों को बेचना है और जो आपसे खरीदेगा, उससे भी यह बात कहनी है।''

यह कहकर एक लाख मुद्राएँ ले मुनि ने गरीबों

- २५ साल पहले चन्दामामा में प्रकाशित कथा -

में बांट दिया और अपने रास्ते चला गया। और जंगल में जाकर पहले की तरह फिर तपस्या करने लगा।

अमर फल के द्वारा जल्दी ही राजा की इच्छा की पूर्ति हो गई। फिर जब युद्ध शुरू हुआ, पड़ोसी राजा बुरी तरह से हार गया। वह राज्य भी इसी राजा के अधीन आ गया।

विजय के मिलते ही राजा ने भरी सभा में उस अमर फल को सबको दिखाकर उसकी महिमा बतायी और कहा, जो भी खरीदना चाहता है, उसको मैं बेच सकता हूँ। दीर्घकाल से एक बीमारी से दुखी रोगी ने उसे ९० हज़ार मुद्राएँ देकर खरीदा और अपने रोग का निवारण किया।

तुरंत अमर फल दूसरे के हाथ में चला गया। उसके प्रभाव से कई लोगों की, कई तरह की इच्छाएँ पूरी हुईं। कुछ लोग अच्छे व्यापारी बने, कुछ विद्यावान बने, कई बीमारियों से मुक्त हुए। इच्छाओं की पूर्ति के साथ अमर फल का प्रभाव भी बढ़ता गया।

बहुत समय बीत गया। पुष्यार्क नामक व्यक्ति को लकवा मार गया। एक बार उसने अमर फल को खरीदकर अपनी पत्नी को मौत के मुँह से बचाया था। उस अमर फल के मूल्य का पता लगाया तो मालूम हुआ कि दो पैसे देकर खरीदने से बीमारी के ठीक होने पर उसे दूसरे को एक ही पैसे में बेचना होगा।

इसके बाद वह आदमी किसी और को न बेच पायेगा और खतरे में पड़ जाएगा। यह सोचकर

पुष्यार्क ने अमर फल न खरीदकर वैद्य पर भरोसा रखना चाहा।

लेकिन उसकी पत्नी मालिनी ने अपने पति से छिपाकर दो पैसे देकर, नौकर के ज़रिये अमर फल मंगवाया और यह इच्छा की कि उसके पति की बीमारी दूर हो जाये।

पुष्यार्क की बीमारी अचानक दूर हो गयी। उसने सोचा कि दवाओं के प्रभाव से बीमारी ठीक हो गयी।

अब मालिनी को अमर फल एक पैसे में बेचना था, लेकिन किसको बेचे ! जो खरीदेगा, उसका क्या हाल होगा !

इसलिए बिना बेचे जो भी खतरा आये, उसका सामना करने का उसने निश्चय किया। उसे खतरा किस रूप में आयेगा, इस भय से मालिनी बीमार जैसी होने लगी।

नौकर ने एक दिन मालिनी से पूछा, ''माई जी, क्या तबीयत ठीक नहीं है?''

''अब मैं ज़्यादा दिन नहीं जी सकती रे !'' यह कह आँसू बहाते मालिनी ने अमर फल की सारी कथा सुनायी।

''माई जी, क्यों?'' नौकर ने पूछा।

''इस फल को मैं किसके हाथ बेचूँ? जो भी खरीदेगा, वह इसी तरह खतरे में फँस जायेगा। देखते-देखते दूसरे को कैसे मरवा डालूँ? मैं ही मर जाऊँगी।'' मालिनी ने कहा।

नौकर ने हँसकर जवाब दिया, ''किसी को मरने की ज़रूरत नहीं। एक पैसे में उस फल को मुझे बेच दीजिए।''

''अरे, पगले ! तुम्हारी इच्छा के पूरी हो जाने के बाद इसे किसके हाथ बेचोगे?'' मालिनी ने पूछा।

''मैं असल में कोई इच्छा करूँ, तब तो ! सच पूछिये तो मेरी कोई इच्छा ही नहीं है। खतरा तो इच्छा की पूर्ति करनेवालों के लिए है। जिसकी कोई इच्छा ही नहीं उसका क्या खतरा हो सकता है ! उसे मैं पेटी में छिपा रखूँगा।'' यह कहकर नौकर ने एक पैसा निकालकर मालिनी के हाथ में दिया और अमर फल को ले जाकर अपने घर में लकड़ी के बक्स के नीचे छिपा दिया। उसके बाद उसका क्या हुआ, कुछ पता नहीं ! लेकिन नौकर को कभी कोई हानि नहीं पहुँची।

# आर्य

राजा शान्तिदेव की अनुपस्थिति में शान्तिपुर का सेनापति वीर सिंह शासक बनने के लिए बेचैन है। वह मंत्री मानवेन्द्र तथा अनेक दरबारियों को हटा देता है। वह मंत्री की हत्या करा देना चाहता है, लेकिन मंत्री बच निकलता है। सेनापति के विरुद्ध आवाज उठानेवाले वसन्त को फाँसी की सजा दी जाती है, लेकिन फाँसी देने के पहले ही एक नकाबपोश उसे बचा लेता है। कोतवाल वसन्त के परिवारवालों से पूछताछ करता है।

## अज्ञात राजकुमार का रहस्य

चित्र : गाँधी अय्या

तुम्हारा बेटा कहाँ है?

हमें नहीं मालूम!

कोतवाल उन्हें चाबुक से मारता है

कोतवाल तब बच्चों से पूछताछ करता है

तुम्हारा भाई कहाँ है?

बताओ, जल्दी, नहीं तो....

जब आप फाँसी देने के लिए उसे ले जाने लगे तभी हम सब ने उसे आखिरी बार देखा था।

ग्रामीण विरोध करते हैं। सबको कोड़े से पीटा जाता है।

हुज़ूर, हम पर क्यों अत्याचार कर रहे हैं?

उनके घरों में आग लगा दो!

राजा शान्तिदेव हमारे साथ ऐसा कभी न करते।

उसका नाम मत लो ।
वह मर चुका है!
भगवान के लिए हमें शान्ति से जीने दीजिये ।
कोतवाल घरों को जलते देख कर आनन्दित होता है । हाँ, तुम्हें शान्ति अवश्य मिलेगी जब सब कुछ राख हो जायेगा ।
मुनि एक मन्दिर के निकट रुक जाते हैं ।
जंगल में, जयानन्द जयनगर के सरदार से मिलने का निश्चय करता है ।
इस बर्षा से बचने के लिए कहाँ शरण लें ?
बाघा, तुम यहीं मेरी प्रतीक्षा करो ।
जयानन्द तोते को अपने आने की खबर देने के लिए भेजता है ।
मट्ठी, तुम बाबू के पास जाओ

सरदार सुखदेव तोते की पुकार सुनता है ।
यह मझे मालूम पड़ता है - बाबा का तोता !
बाबू! बाबू!
बाबा! बाबा!
सरदार जयानन्द के स्वागत के लिए दौड़ पड़ता है ।
तुम्हारे लिए फाटक खोल दूँ बाबू!
बाबा, पहले आप पानी पोंछ लें, बातें बाद में करेंगे ।
मैं एक महत्वपूर्ण उद्देश्य से यहाँ आया हूँ । मुझे खुशी है कि तुमसे अकेले में भेंट हो गई ।
मुनि और सरदार शान्तिपुर की समस्या पर विचार-विमर्श करते हैं ।
राजधानी से मिली खबर परेशान करनेवाली है, बाबू
यह एक भयानक त्रासदी है । सम्पूर्ण राज परिवार लापता है ।

जयानन्द एक चेन निकाल कर सुखदेव को दिखाते हैं ।
बाबू, शिशु राजकुमार मेरे साथ है । इस चेन को देखो ।
मैं लटकन पर राजचिह्न देख रहा हूँ । आप के पास जो शिशु है, वह निस्सन्देह राजकुमार है ।
उसकी देखभाल मुझे करने दीजिए, बाबा!
ध्यान रहे, कहीं वह शत्रु के हाथ न लग जाये! पलते बढ़ते समय उसे मालूम न होने दो कि वह राजकुमार है ।
लेकिन बाबू, मैं चाहता हूँ कि इस चेन को तुम अपने पास रखो ।
बाबा, आप मुझ पर भरोसा रख सकते हैं । मैं इसे सुरक्षित रखूँगा । लेकिन........
मैं इसे राजकुमार को कब सौंपू? उसे कैसे पता चलेगा कि यह मेरे पास है?
उपयुक्त समय पर राजकुमार सुमेध यह तुमसे माँगने आयेगा, बाबू ।
क्रमशः

# आप के पन्ने आप के पन्ने

## विज्ञान तुम्हारे लिए

### नमक और प्यास

तुमने शायद ध्यान दिया होगा कि तुम जब अधिक नमक की कोई खाद्य वस्तु खाते हो तो प्यास लग जाती है । यह सर्वविदित है कि नमक प्यास बढ़ाता है ।

नमक में आखिर क्या है जो हममें पानी पीने की इच्छा जगा देता है? उत्तर सरल है । हमारे सभी भोजन में कुछ नमक होता है और नमक टिशूज से पानी किडनी की ओर खींचता है जहाँ गन्दे तरल पदार्थ को साफ किया जाता है । यदि भोजन में बहुत नमक है तो खींचे गये पानी की मात्रा सामान्य रूप से अधिक होगी और टिशूज में पानी की कमी हो जायेगी।

जब भी टिशूज में पानी की कमी होती है, तब वे अपनी जरूरत का संकेत जीभ तथा गले को देते हैं और पानी पीने को प्रेरित करते हैं ।
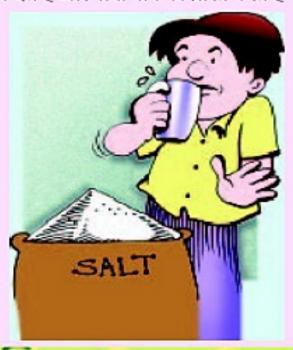
## तुम्हारा प्रतिवेश

### सुरक्षा - सर्वोच्च प्राथमिकता

क्या तुमने कभी यह देख कर आश्चर्य नहीं किया कि पक्षी वृक्षों पर ही अपने घोंसले क्यों बनाते हैं? कारण सरल है, क्योंकि वे नहीं चाहते कि उनके शिशु-जब वे अण्डों से बाहर आते हैं, तब, परभक्षियों के शिकार बन जायें ।

शिशु-पक्षी उड़ नहीं सकते, इसलिए अत्यन्त नाजुक और आक्रमण के प्रति संवेदनशील होते हैं । और बिल्ली जैसे अनेक ऐसे जानवर होते हैं जो आसानी से पेड़ों पर चढ़ जाते हैं और इन शिशु-पक्षियों का शिकार करते हैं ।

यदि ऊपरी शाखाएँ इतने मजबूत न हों कि इनका भार सह सकें तो पशु उतनी ऊँचाई पर नहीं चढ़ेंगे ।

इसलिए चतुर पक्षी अपने घोंसले बनाने के लिए वृक्षों पर यथासम्भव ऊँचे स्थान का चुनाव करते हैं ।

वे यथा सम्भव अपने घोंसलों को छिपाने का भी प्रयास करते हैं ।

# आप के पन्ने आप के पन्ने

## क्या तुम्हें मालूम था?

तुम सुबह जब नींद से जगते हो तो नींद की कमी के कारण आँखें धुंधली रहती हैं, क्योंकि किसी के खर्राटे ने तुम्हें परेशान किया है ।

खर्राटे को हँसी में टाल देना नहीं चाहिये । इसके विपरीत यह एक गंभीर समस्या है, उनके लिए, जिन्हें खर्राटे सुनने के लिए बाध्य होना पड़ता है ।

लोग आखिर खर्राटे क्यों भरते हैं? प्रायः गले

में या नाक के मार्ग में अवरोध के कारण ऐसा होता है जो जुकाम या एलर्जी से पैदा होता है । सामान्य तौर पर खर्राटा पीठ के बल सोने से शुरू होता है । इस स्थिति में नीचे का जबड़ा खुल जाता है । मुँह के द्वारा श्वास लेने पर अन्दर आनेवाली हवा कोमल तालु और कौआ (गले के पीछे लटकने वाला मांसल मांसपेशी) को प्रकम्पित करती है । और खर्राटा शुरू हो जाता है ।

## अपना बौद्धिक स्तर बढ़ाओ

### पशु-संसार

१. वह कौन-सा पशु है जो सोने के लिए उसी बिस्तर का दुबारा उपयोग नहीं करता जिसका वह पहले उपयोग कर चुका है ।

२. यूनानी सिपाहियों ने एक समुद्री जानवर को देखा और नारी समझ कर उसे जलपरी नाम दिया । वह कौन सा जानवर था?

३. क्या कीड़े ऐसे रंग को देख सकते हैं जिसे मनुष्य नहीं देख सकता?

४. प्रकृति में सबसे अधिक बेरहम और कुशल परभक्षी कौन है?

५. क्या अंटार्कटिका में कीड़े होते हैं?

(उत्तर पृष्ठ ६६ पर)

# चित्र कैप्शन प्रतियोगिता

क्या तुम कुछ शब्दों में ऐसा
चित्र परिचय बना सकते हो, जो एक
दूसरे से संबंधित चित्रों के अनुकूल हो?

MAHANTESH C. MORABAD

SOURAA

*चित्र परिचय प्रतियोगिता, चन्दामामा,*
प्लाट नं. ८२ (पु.न. ९२), डिफेन्स आफिसर्स कालोनी, इकाडुथांगल, चेन्नई -६०० ०९७.
जो हमारे पास इस माह की २० तारीख तक पहुँच जाए। सर्वश्रेष्ठ चित्र परिचय पर १००/-रुपये का पुरस्कार दिया जाएगा, जिसका प्रकाशन अगले अंक के बाद के अंक में किया जाएगा।

## बधाइयाँ

दिसम्बर अंक के पुरस्कार विजेता हैं :

मोनालिसा आचार्य
C/o. श्री अरविन्द सोसाइटी
१, रंगापिलैई स्ट्रीट, पाँडिचेरी -६०५ ००२

विजयी प्रविष्टि

तुम पढ़ लो तब तक,
मैं खेल लूँ जब तक

## 'अपना बौद्धिक स्तर बढ़ाओ' के उत्तर

१. गोरिल्ला हर रोज एक नया बिस्तर तैयार करता है।
२. समुद्री गाय
३. हाँ, मधुमक्खियाँ पराबैंगनी देख सकती हैं, जिसे हम लोग नहीं देख सकते।
४. मनुष्य
५. हाँ, लगभग ४० जातियाँ हैं।

Printed and Published by B. Viswanatha Reddi at B.N.K. Press Pvt. Ltd., Chennai - 26 on behalf of Chandamama India Limited, No. 82, Defence Officers Colony, Ekkatuthangal, Chennai - 600 097. Editor : B. Viswanatha Reddi (Viswam)

CHANDAMAMA (HINDI) FEBRUARY 2004
REGISTERED NO. TN/PMG(CCR)-594/0
REGD. WITH REGISTRAR OF NEWSPAPER FOR INDIA NO. 1987 ... POST WITHOUT PREPA... 381/03-0
FORE... 2/03-05